ले० रामचरण ह्यारण "मित्र"

लौलैयाँ

लेखक

रामचरण हयारण 'मित्र'

भूमिका—

श्री ब्योहार राजेन्द्रसिंह

प्रकाशक :—

ज्ञानमन्दिर

[illegible]य प्रेस, जबलपुर ।

१९५७

दो-शब्द

स्व० श्री मुन्शी अजमेरी जी से सन् १९२४ में जन-कवि ईसुरी की फागैं सुनने का सर्व प्रथम अवसर मुझे कोंठ ग्राम्य में मिला था। मैं वहाँ एक कवि सम्मेलन में गया था। कविता पढ़ने के पश्चात् जब मैं अपने स्थान पर आया, तो एक भद्र पुरुष जो कि देखने में मथुरा के चौबे सदृश लगते थे, अपने सहज-स्वभाव से मुस्कराते हुये बोले, "भैया तैनें भौतइ नौंनीं कविता सुनाई और कउँन तो सबसे नौंनीं लगी" मैं समझ गया कि यही मुन्शी अजमेरी होंगे। मैंने उन्हें श्रद्धा से प्रणाम किया और बैठ गया।

सम्मेलन समाप्त होने के बाद चाय के दौरान में एक वृद्ध पुरुष ने मुन्शी जी से ईसुरी की एक फाग सुनाने का आग्रह किया। वे तपाक से बोले "एक नइँ दउ।" फिर क्या था? उनकी मधुर कण्ठ ध्वनि से कमरा गूंज उठा। फाग की "जिन जाव बिदेसी दिन थोरौ।"

यहीं से मुझे बुन्देलखण्डी से प्रेम और उसके शब्द माधुर्य का ज्ञान प्राप्त हुआ, उस थोड़े समय के परिचय के ही कारण जब कभी मुन्शी जी झाँसी आते तो मेरे घर अवश्य आते, और अपनी बुन्देलखण्डी किस्सा कहानियाँ और ईसुरी की फागैं अपने सहज स्नेह वश घंटों सुनाया करते। उनके कहने का ढँग इतना आकर्षक था कि बाल-वृद्ध किसी का भी मन नहीं ऊबता।

उनका यह दावा था कि बुन्देलखण्डी भाषा में व्रजभ
से अधिक माधुर्य है। और जब कभी वे साहित्यिक दृष्टिकोण
व्रज के रसिया और बुन्देलखण्डी फागों की विवेचना करने ल
तो साहित्य प्रेमी मंत्र मुग्ध हो जाते।

इसी समय के श्रवण किये हुए भाव, समय पाकर
कवि हृदय में अंकुरित हो पनप उठे, जो कि श्री गिरजाकुमार
माथुर तथा श्री रामउजागर जी द्विवेदी के स्नेह द्वारा अधिक
लखनऊ रेडियो द्वारा प्रसारित हुये। वे ही "लौलैंया" नाम
प्रस्तुत हैं।

संसार में लौलैंयाँ की बेला सभी को प्रिय लगती है। इ
समय में दूर-दूर से पक्षी तथा-पथिक गण विश्राम लेने अप
अपने निवास स्थान में आ जाते हैं। वास्तव में इस काल में
जड़-चेतन सभी जीवों को विश्राम मिलता है।

मेरा विश्वास है कि लौलैंयाँ के कुछ क्षण बाद ही चन्द्र
का उदय होगा, जो कि अपनी सुधा-मयी किरणों द्वारा साहि
प्रेमियों के हृदय को सिक्त करेगा।

सुप्रसिद्ध साहित्य सेवी श्री व्योहार राजेन्द्रसिंह जी जो
जबलपुर के प्रमुख राष्ट्रीय नेता भी हैं, उन्होंने "लौलैंयां"
अपनी यशस्वयी लेखनी द्वारा भूमिका लिखकर तथा इस
प्रकाशन भार वहन कर मुझे जो प्रोत्साहन दिया है उसका
उनका हृदय से आभार प्रदर्शित करता हूँ।

विनीत—

रामचरण हयारण 'मि

भूमिका

बुन्देलखण्डी और ब्रजभाषा इन दोनों में कौन अधिक मधुर है, इसके विषय में मतभेद हो सकता है, किन्तु दोनों ही युगों से सभी बहिनों के समान पास पास रहतीं और फूलती फलती आई हैं। मध्य-काल में दोनों ही में महाकाव्यों की रचना हुई है। यदि ब्रजभाषा को सूरदास, देव और बिहारी पर गर्व है तो बुन्देली को भी केशवदास पद्माकर और लाल कवि पर अभिमान है।

लोक भाषा होने के कारण लोक गीतों और लोक गाथाओं में लोक कवियों ने अपने हृदय के उद्गार प्रगट किये है। जनता के अत्यधिक निकट होने के कारण ये लोकगीत जनता के हृदय की भावनाओं को प्रगट करने में सबसे अधिक समर्थ हुए हैं। आधुनिक काल में लोक कवि ईसुरी ने जनता के हृदय को सबसे अधिक प्रभावित किया है। क्योंकि इन्होंने जनता की घरेलू बोली—वाणी में जनता की खेत-खलियान घर-द्वार, प्रेम और विरह की बातें बड़े सीधे सादे ढंग से कही हैं। श्री गौरीशंकर जी द्विवेदी ने उनके लोक गीतों का संग्रह और सम्पादन बड़े ही परिश्रम से किया है (मानस मन्दिर से प्रकाशित ईसुरी प्रकाश प्रथम भाग द्रष्टव्य)

उनसे प्रभावित होकर मेरा ध्यान बुन्देलखण्डी के सहज-माधुर्य की ओर गया। इस बीच रेडियो पर कभी-कभी श्री

रामचरण ह्यारण 'मित्र' द्वारा प्रसारित लोक गीतों को सुन
का अवसर भी मिलता रहा, जिससे यह बात सिद्ध हो गई
इस युग में भी बुन्देलखण्डी में सुन्दर काव्य-रचना हो सक
है। बुन्देलखण्ड साहित्य सम्मेलन (झांसी) के अवसर प
उनके मुख से जब प्रत्यक्ष रूप से उनके लोकगीतों को सुन
का अवसर मिला तब उनका माधुर्य और भी बढ़ गया। पन्ना
हुए बुन्देलखण्ड हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अवसर पर
कवि गोष्ठी में उनकी सरस काव्य रचना ने समा ही बां
दिया था। फलस्वरूप एक छोटा सा यह काव्य संग्रह पाठक
के हाथ में है।

जिन पाठकों की मातृ-भाषा बुन्देलखण्डी नहीं है उनके
लिए इस संग्रह में आए हुए सौकारूं, लोलैयां, गोसली
उरैयां और ठिकोला आदि शब्द कुछ अनोखे से लगेगें किन्तु हम
लोग जो नित्य ही इन शब्दों को सुनते बोलते हैं उनको इन
शब्दों में विशेष आनन्द आवेगा। क्योंकि इनमें जो विशेष अ
भरा हुआ है वह अन्य शब्दों द्वारा व्यक्त ही नहीं किया ज
सकता। नित्य बोलचाल की भाषा में जो सरसता और मधुरत
है वह दूसरी भाषा में मिलना कठिन है। जो बातें इस बोली में
स्वाभाविक है हैं ही खड़ी बोली में कृत्रिम सी जान पड़ती हैं।
साहित्यिक दृष्टि से चाहे उन पर ग्रामीणता का दोष भले ही
लगाया जावे किन्तु उसके साथ घरेलूपन और आत्मीयता का
गुण भी स्वीकार करना पड़ेगा।

"लोलैयाँ" के प्रथम गीत ही में जो कि प्रेमपूर्ण घरेलू

वातावरण है वह खड़ी बोली में अनुवाद करने से मिट सा जाता है।

बड़ी बहिन उसमें अपने छोटे भाई को बड़े ही प्रेम पूर्ण शब्दों में जगा रही है। "बीरन" शब्द में आत्मीयता मानों भरी पड़ी है। प्रातःकाल का सरस वातावरण इस पंक्ति में मानों मूर्तिमान हो उठा है :—

"बीरन हो रओ भोर,
दूद सी डूबन लगी तरैयां।"

ताराओं की दूध की उपमा शुभ्रता की दृष्टि से सुन्दर लगती है। इसी प्रकार ऋतुओं का सौन्दर्य भी इन गीतों में उतरा है। शरद ऋतु का सौन्दर्य "धुव गई नभ की सुरंग चुनरिया' में उज्ज्वल हो उठा है और श्रावण की घन घटा— "सावन की जा झपक जुनैया," में घिर आई है। वर्षा और विरह का मानों निकट का सम्बंध है। इस घन घटा के घिरते ही विरहीगण अपना सन्देश भेजना शुरू कर देते हैं। कालिदास से लेकर ग्रामीण कवि तक उसमें सम्मिलित हैं जो कि बुन्देलखण्डी में अपना सन्देश भेजते हैं :—

"इतनी विरन सों बदरवा जा कहियो,
बैना बिलखे बमूरा की छांह।"

कवि केवल "गांव पुरा की बातें" ही नहीं कहता किन्तु सारे बुन्देलखण्ड की गौरवगाथा गाता है। "जो बुन्देलखंड को गाउत जावे चलो पमारो।" उसके हृदय में केवल वर्षा ऋतु ही हूक नहीं जगाती वरन बसन्ती बयार भी हृदय में कसकती है।

चलन लगी जा बैर बसन्ती,
कसकन लगी जिया को।"

कवि की वाणी में विरह का स्वर इतना प्रबल है कि वह सारा कृष्ण-पक्ष विरह में बिताता है। नव चन्द्रोदय को देखकर मानों उसके हृदय में आशा की क्षीण रेखा उदय हो जाती है।

दोज के चन्दा झिंझरियन झांको
मेरो तुमई से जियरा जुड़ात।

केवल विरह और शृंगार ही नहीं किन्तु वीरकाव्य में आल्हा के देश में उत्पन्न होने के कारण बुन्देलखण्ड के कवि वीरता के आह्वान भी नहीं भुला सकते :—

"बँदो शीश मन्डील,
चमक रओ कर में नगन दुधारो।

पढ़कर आल्हा की भुजरियों की लड़ाई याद आ जाती है। बुन्देलखण्ड के समर विजेताओं का स्वागत करने के लिए उनकी वीरपत्नी के हृदय में जो भावना उत्पन्न होती है उसी उत्साह से पति के वीरगति के प्राप्त होने पर सती होने को उद्यत हो जाती है—

"जीत सब संग्राम परो घर,
समर मंझार रे।

तिलक कराउन रानि विजय को,
आओ शीश दुआर रे ॥
सुनके हुमक उठी क्षत्राणी,
सजा सोरऊ सिंगार रे ।
तिलक करो, धर शीश गोद लओ,
अपनो सत्त संवार रे ॥

यदि पति पत्नी के पवित्र प्रेम में इस त्याग और बलिदान की प्रबल भावना है तो बहिन और भाई के प्यार में एक और ही विचित्र सरलता और मधुरिमा है ।

राखी (रक्षा बन्धन) का समय समीप आ रहा है । और भाई बहुत दूर है, अतः बहिन उसे एक व्याकुल संन्देश भेजती है:—

"वीरन तोरे बिन कोउ नैया,
राखी को बँदवैया ।
एक दिना सावन को रे गओ,
लो सुध मोरे भइया ॥

'मित्र' जी के छन्दों की मधुरता के साथ शब्दों की उपयुक्त योजना विशेष द्रष्टव्य है । इसके साथ ही साथ, उनकी मुहावरेदार भाषा पाठक को तुरन्त प्रभावित करती है ।

जैसे— (१) "हम तुम एक घाट के पानी ।

× × ×

(२) अब तक कुठिया में गुर फोरत रई कोउ न जानी

× × ×

(३) गूजर जात तकत ऊजर में कां तक गांव पमारे ।'

× × ×

(४) जैसे परत बटेर हात में मन मुसकावे कानों ।"

× × ×

"मित्र जी" ने कई पदों में कई सुन्दर अन्योक्तियाँ भी कही है ।

रे पंछी विसना की डांगन में,

भटकत मुतके दिन बीते ।

" रे पक्षी तृष्णा की घाटियों में तुझे बहुत दिन बीत गये ।" मित्र जी के इस छन्द में दर्शन का भाव आ गया है ।

कहीं कहीं तो मित्रजी ने संतों के समान अपने मन को सम्बोधन किया है:—

"अब मन रामई में अनुरागो ।"

तो एक सच्चे देश भक्त के समान देश के नवयुवकों को भी उद्बोधन किया है। वे कह उठे है :—

"जो पन्द्रह अगस्त को दिन,
साँचऊ सोने को भइया।
ओ धरती के पूत जग उठो,
जगे सूरजमल्ल भैया ॥"

इस प्रकार "छौलैयां" में हयारण जी ने बुन्देली बोली में बुन्देलखण्ड के ग्रह जीवन, ग्रामीण वातावरण, प्राचीन वीरता की परम्परा और आधुनिक राष्ट्रीयता का संदेश देने को अपनी सरस लेखनी से सफल प्रयत्न किया है। आशा है, इससे बुन्देलखण्डी भाषा भाषियों को काव्य के साथ जीवन की सरलता और सरसता का एक मधुर सन्देश मिलेगा।

गुरु पूर्णिमा
व्योहार भवन,
जबलपुर।

ब्योहार राजेन्द्रसिंह

लोलैयाँ

(१)

बीरन ! हो रुओ भोर दूद मीं डूबन लगीं तरैयाँ । बीरन..

बड़ी भुजाई नें बखरी कौ,
टाल टकोरा रुलओौ ।
माते जू ! के बड़े कुआ कौ,
मीठो पानी भल्लओौ ।

मुरगन्नें दइ बाँग डरैयन बोलीं स्याम चिरैयाँ । बीरन ..

मानकुँवर ! नें सारन कौ सब,
कूरा करकट भर लओौ ।
दूद देत गैयन भैंसन कौं,
दन्नौ दर कैं धर दओौ ।

सौंकारूँ कर लेव गोसिली लगीं रमाउन गैयाँ । बीरन...

नन्नीं बऊनें दोउ माँवन कौ,
दई माँ लओ मबरो ।
जुनइ रखाउन हरियन सें,
डरुआ ! खेतन कौ डगरो ।

कहा करैयाँ हो अँगना में आगइं ऐन उरैयाँ * । बीरन...

---

* प्रातकाल की सूर्य की किरणें ।

मउआ बीनन कइगओ पनुआँ,
लैकैं बड़ो ढिकौला‡।
भीक माँगवे आगओ-
दोरें बो सादू हर बोला।
जो कअंरा† को भँड़ो मानों डेरो खोल किबैयाँ। बीरन ..
आलस छोड़ होत भ्याँनें,
कर लेय काम जो अपनें।
'मित्र' सदइँ बो सुक्ख उठावै,
दुक्ख न आवै सपनें।
मोय छोड़ कैं नैंयाँ भैया कोऊ तोय जगैंयाँ।
बीरन! हो रओ भोर दूद सी डूबन लगीं तरैंयाँ।

❖

(२)

धुवगइ नभ की सुरँग चुनरिया,
गइ बदरन की बरात।
बे! नइँ आये शरद्रित आई,
की सौं कहा बसात। धुवगइ...
गईं पुखरियाँ रीत बीत गये,
नदियन के उतपात।
सूखन लगी गैल पगडंडी,
सिरस निरस भयँ पात। धुवगइ ..

---

‡ कागज और मिट्टी से बना हुआ। † यदि कहीं।

राधा कान्हा, हर सिंगार की,
डारन लिपटत जात।
फूलन लगौ मोय लख कें,
जा, बुरइ काँस की जात। धुवगई ..

किरकिचयाऊ, मनई मन में,
फूल -- फूल इतरात।
जुगन - जुगन को नेव - मूल,
संखा हूली इठलात। धुवगई...

अपनें फूँटे मद में भूले,
हिन्ना ऊलत रात।
मार -- मार नेनन की सैनें,
खंजनियाँ ढुकजात। धुवगई

विन्ध्य पारियन छिटकन--
लागी, सेत जुनैया रात।
चन्दा किरनन सें कमोदनी,
मिल मस्कई मुस्कात। धुवगई...

कौन - कौन की, का - का कइये,
की सैं की की बात।
'मित्र' भये अपनें नइं बेई,
जिनसें जिया जुड़ात। धुवगई...

(३)

अछरू माँतन के मेला सें निकरौ इक बँजारौ।
जो बुन्देल खण्ड को गाउत जावै चलो पमारौ।
सुनतन बोल कुआ की बोली चतुर एक पनिहारी।
रूप रंग की नोंनीं बोली कोइल की उनहारी।

इतनी बात बतायें जइयो ओ भैया गैलारे।
कौन बरन बुँदेल भूम है कैसे है गलयारे।
आड़े परे पहार गैल में करयें जाँ रखवारी।
सोंन, धसान, बेतवा, चम्बल की जाँ छब अनयारी।

कैसे ताल तलैयाँ कैसे झिरआ, नदिया नारे।
फूलन लगे करोंदी के कउँ देखे बिरवा बारे।
बौर भार में दबीं लमछरीं नोंनीं आम डरैयाँ।
देख परी कउँ राम–नाम लेतन वे सगुन चिरैयाँ।

झाँसी और महोबा, कालींजर कौ गढ़ अत भारौ।
देखो का तुमने आला ऊदल कौ नगन दुधारौ।
जगनिक कौ आला, लक्ष्मीबाई कौ साकौ बांचौ।
जी में बीरन की गाथा कौ खिचौ चित्र है सांचौ।

फागैं सुनीं ईसुरी की कउँ रामायन तुलसी की।
सुनीं कितउँ केशव की कविता हरन हार जो जीकी
चित्रकूट के का रूखे रूखन कीं देखीं छैयां।
जाँ बसकैं अपनी विपता निरबारी राम गुसैंयाँ।

हरसिंगार सें लिपटीं राधा कान्हा की बेलैंयाँ।
तिनकी डारन डार हिंड़ोला मिचकीं लैरईं गुइयाँ।
लड़आ मेवा बेर कलेवा, गुलगुच बड़ी मिठाई।
पुरखन सें जा सुनीं कहाउत जी भरकें का खाई

❖

(४)

सावन की जा झपक जुनैया, ऐसी मोय दिखात है।
जैसें बूड़ी कारी नागिन डंसन चहत अधरात है।

सॉंजइ सें पुरवैया बैरइ,
मेरो जिया डरात है।
घिर आये जे कारे बदरा,
होन लगी बरसात है।
जे बुँदियाँ तिरछे तीरन सीं,
घाव करैं मो गात है।
मोरे सैंयाँ घर में नैंयाँ,
मोरी कौन बसात है।

सावन की जा झपक जुनैया ऐसी मोय दिखात है।
जैसें बूड़ी कारी नागिन डँसन चहत अधरात है।

जामुन की झुरमुट में पपिहा,
पिया, पिया बतरात है।
जो की बोली सुन-सुन मेरौ,
मन जौ बैठन जात है।
जइपै कूक-कूक कोइलिया,
आमन पै इठलात है।
कोउ संगानी मेरो नैयाँ,
बिन्नू कैसी बात है।
सावन की जा झपक जुनैया ऐसी मोय दिखात है
जैसें बूड़ी कारी नागिन डँसन चहत अधरात है
दोउ कँगारे दाव बेतवा,
घर्र-घर्र घर्रात है।
आड़े परे पहार बीच में,
कोउ न आउन जात है।
को बँद्वाहै 'बन्नू तेरी-
राखी, दाँयें हात है।
कैसें मिरहैं 'मित्र' भुजरियाँ,
मौकौं जौ संताप है।
सावन की जा झपक जनैया ऐसी मोय दिखात है
जैसें बूड़ी कारी नागिन डँसन चहत अधरात है

गाँव-पुरा की बातें

(५)

अपनें मौज मजे में सबकों अपनीं-अपनी रातें।
वैसइ नानी हमकौं अपनें गाँव पुरा कीं बातें।
सब काऊ कौं लगतइ मीठी बोली मोहनियाँ की।
चाल चलन में कोउ नइ समसर कर पाउत धनियाँ की।

रनक झनक भल्यावै पानी गुयियाँ दकैं टैया
कोयल कठ मोहरंगा मनियाँ मोंगावै भैया।
भाँ कैं मठा जसुदिया सींकन सें भरल्यावै भौंना।
नौंन डार कैं सबै प्यावै भर-भर दो-दो दोंना।

दै कैं मौंन गकरियाँ पै काकी धनुआँ कौं टेरै।
दूद-मीड़ खबावै पुचकारै हांत पीठ पै फेरै।
ऐसौ सूदो सरल भाव साँचउँ सुरगउ में नैयाँ।
जी की साक भरन कौं संजा कौं नित उगें तरैयाँ।

तन कइ दूर पुरा सें मीठे पानीं कीं पचकुइयाँ।
दयें कछोटा हिल-मिल पानी भरबे जातीं गुइयाँ।
ईंगुर बरन बेस लरकैयाँ बदुआ कैसी मुँइयाँ।
चंदन हार गरे में पैरैं बगुआ हाँतन सैयाँ।

सूरज सामें पचकुँयन के मढ़ माँतन कौ भारी।
जो बिरसिंग देव जू कीं हैं हाँतन कीं पौंड़ारी।

गँवड़े बाहर बाहर मटउ पारिया पै छैंकुर कौ बिरवा।
जी की डारन बैठ किलोलें करत चिरैंयाँ चिरवा।

चैत-चाँदिनो की छब हरगइ छिटकी शंखा हूली।
भरी "इमिरती" समुदा सी जी में कमोदनी फूली।
इन फूलन संग लहरन में चंदा की किरने सूलें।
जिनकी आँख मिचौनीं लख-लख बिरहिन के मन ऊलें।

बिनइ दुर्ग लक्ष्मीबाई की गारओ अमर कहानी।
सन् सन्तावन में जाँ उतरौ गोरंडन कौ पानी।
तोप कड़क बिजली के गोलन के भये हँइ धमाके।
हँइ भये बल-दान भूम पै बीर बाँकुरे बाँके।

तला बीच लक्ष्मी जू कौ मड़ जी की अकथ कहानीं।
देखन बनन आज लगें जी की कारीगरी पुरानीं।
तराँ-तराँ के तला पार प उड़रयँ सुआ परेवा।
अठखंभा के काजें लगतइ रोज हँइ सें खेवा।
करयाँ पानी बीच पैरबो कछू सीख रये मौंड़ा।
कछू बाँस ; य खे रये किस्ती कछू चलारये डोंड़ा।
कछू पालती मार-मार कैं दैरये ऐन मुटारैं।
कछू लगा गोता धरती की लैवौ थांयॅ बिचारैं।
"छत्तसाल" की जरइ टौरिया नये तला के आँगें।
जहाँ करौंदीं के फूलन के मंद भकोरा लागें।
सत्र बिजय कौ हँइ चढ़ो तो बुँदेलन पै पानीं।
जी को बरनन कर पवित्त हो गई 'मित्र' की बानीं।

(६)

इतनी बिरन सौं बदरवा जा कइओ,
बैना बिलखैं बमूरा की छाँय।

उजर गई निठुआँइ फुल बगिया,
क्यारिन जमीं कुनाँय।
गुबरीला सुख भोगैं भौंरा,
नीमन पै मड़राँय।

इतनी बिरन सौं बदरवा जा कइओ,
बैना बिलखैं बमूरा की छाँय।

खेत खान बिरवारी लागी,
हरवारे घबराँय।
सगुन चिरैयँन की कर,
हरिया, सकुच लौट घर आँय।

इतनी बिरन सौं बदरवा जा कइओ,
बैना बिलखै बमूरा की छाँय।

बुरइ पीर परवस की होतइ,
बुरइ कूर की बाँय।
भेड़ पूँछ गै भादों नदिया,
कोउ पार नइँ जाँय।

इतनी बिरन सौं बदरवा जा कइओ,
बैना बिलखै बमूरा की छाँय।

दो टूंका धरती के हो गये,
की कौं लख हरखाँय।
बिछुड़ गये मैयन सैं मैया,
कैसैं जिया जुड़ाय

इतनी बिरन सौं बदरवा जा कइओ.
बैना बिलखै बमूरा की छाँय।

हम जानी कछु हती और,
भइ दसा कछू जग माँय।
'मित्र' तुमइँ कओ कौन तराँ,
अब अपनी लाज बचाँय

इतनी बिरन सौं बदरवा जा कइओ,
बैना बिलखै बमूरा की छाँय।

❖

(७)

हँस दैलये भँझर किवार सजन!
ककना वनवा देव सौनें के।

बारे देवरा ने दुलरी लैदइ
रुच गढ़ दई सुगर सुनार

सजन! ककना वनवादेव सौनें के। हँस—

ननदेउआ ने बिछिया लैदं
पग धरत होत झनकार

सजन ! ककना बनवा देव सौंनें के । हम—

जेठी ननदी नें चंदन हार दओ,
मेरे जोबन कौ सिंगार ।

सजन ! ककना बनवा देव सौंनें के । हम—

तीन वचन मोय हारियो,
तव निकरन ! देहौं द्वार ।

सजन ! ककना बनवा देव सौंनें के । हँस—

'मित्र' सजन हस गैलई,
तोपै जाउँ धना ! बलहार ।

सजन ! ककना बनवा देव सौंनें के । हँस—

(८)

गलयारे ! झपक आई साँझ,
अँगारूँ डाँग करोंदा की भारी ।
जी में रइत दलाँकत नाँर,
तुपकयन* जी जाँजर हिम्मत हारी ।

चौंकै चिरइ न फरकत बार,
न फूटत तीर विकट ऐसी आरी ।
तइपै आड़े परे हैं पहार,
फड़ी तिन फोर वेतवा मतवारी ।

* बन्दूक चलाने वाले ।

देखौ दावत आवै कगार,
घोर कर घहरै विन्ध्याचल वारी।
छाई भर भाँदों की रैन,
घिरी चउ ओर अमावस अँधयारी।

मेरो देवर न घर में रा
जिठानी, मौत दिनन सैं है न्यार
वे ! कौनउँ कउत न बा
करौं में चाँय सेत चांय कारि

तुम हैंइँ करौ विसराम,
वड़ी बरिया तर लो डेरा डारी।
नइँ कौनउँ चिन्ता करौ,
करौं मैं रान तुमाई रखवारी।

दोऊ अमइँ बाखिरी मैं
कराऊँ अपनें हाँतन सैं ब्यार
पीओ निर्मल ठंडो नी
भरी सींकन‡ सें जा झंझन झारी

भुन्सारैं लियो घर गैल,
'मित्र' जब जाय कुआ कौ पनहारी।
तुमरो नोंनों देख सुभाव,
करी तुमसें मैंनें जा विन्तवारी।

---

‡ मुँह से भरा पात्र।

(६)

काय बिनगुत की बातन मॉंय,
रोज बीड़े रहतइ उठ भोर।
द्रोपदी के पट के उनहार,
परत जिनकौ कछु ओर न छोर।

परोसी बड़े गाँव के राव,
निठल्ले जिनें काम नइं धाम।
कमाई करी कराई धरी,
फुला रये जी पै बैठे चाम।

तुमाये गरें आठ जी बँदे,
रोज जिनकौ कन्ने निर्वाव।
करन मैं मैन्त मजूरी जात,
तुमइ सोइ उठ कछु रचौ उपाव।

सुन् लई पंछी करत न काम,
न अजगर करन चाकरी जाँय।
करमहीनन की जा कानात,
करम बिन करैं न कोऊ खाँय।

तुमाई जा फूलन सी देय,
झुरस गई तनक ध्यान तो देव।
निहोरे से कररइ दिन रात,
लगाबौ छोड़ चरस कौ देव।

चित्त ना चिन्ता कौनउँ करौ,
बिना भुगते नइँ कटनें पाप।
गाँठ में नइँ राखत जब मूल,
ब्याज कौ करतइ काय विलाप।

धरौ हिरदे में थिरता नेंक,
आलसिन कौ जू छोड़ो संग।
करौ तुम लाख जतन नइँ कड़ें,
छैवलन के पत्तन में रंग।

परख कैं 'मित्र' मित्रता करो,
जई सब कउतइ वेद - पुरान।
न चलतइ पड़ा बैल कौ जोत,
बात सुन लेव खोल कैं कांन।

पुरष पारष की माया होत,
करत जे पोरख हैं दिन रात।
उनइँ कौं देत सहारौ राम!
उनइँ कौं देत लक्ष्मी सात।

उठो जू! हार रखावत जाव,
चिरैयाँ चुन [illegible]उँ लाँय न खेत।
तनक सी भूल गरइ हो जात,
खेत में [illegible] लगात है रेत।

कओं मैं एक मरम की बात,
देव उठतनइँ जान निज धरम।

बड़ी बिटिया कौ कन्नें ब्याव,
कबेंला में जियं लगतइ शरम।

जनम – पत्री कौं धरदो खुस,
करम – पत्री पै कर विश्वास।
करौ मनियाँ के पीरे हाँत,
जौन महना में मिलै उकाम।

राम दय देत कनूका चार,
करौ तौलौं लरका की खोज।
जोर कें नाते रिस्तेदार,
भाँवरें फेर उतारो बोज।

होय जिनकैं सिक्कन कौ चलन,
नईं उनमें कन्नें व्योहार।
अगाड़ू और काम हैं धरे,
न लैंनें कौड़ी एक उधार।

राख हैं वे! पुरखन की लाज,
नाव हरदौल लला को लेव।
जोर कर, कन्या अरपन करौ,
पाँव पखरइ में गैया देव।

होत जितनी तिरिया की बुद्ध,
कई हम उतनी तुमसें बात।
करौ नौंनीं जो तुमकौं लगै,
देवें में सबइ तराँ सैं सात।

पिछाड़ूं भूल चूक देव डार,
करइ कउ लगै हमाई बात।
पैल जो होत नीम सी करइ,
पिछाड़ूं बइ गुर सी गुरयात।

✥

(१०)

चलन लगी जा बैर बसंती कसकन लगी जिया कौं।
करौं कहा तुमऊँ कओ गुइयाँ उनके घरे टिया कौं*।
जे छेवले के फूल भीतरइँ भीतर आग लगावैं।
और बौंर आमन के रग-रग सोउत काम जगावैं।
फूल करोंदी के भुन्सारें ऐसौ देंय भकोरा।
जी भौंका सें सिकुर-सिकुर तन हो-हो जात ककोरा।
धरै करेजो कूक, टूंक का करदउँ कोइलया कौं।
चलन लगी जा बेर बसंती कसकन लगी जिया कौं।
अबै तलक मैं जो जी राखैं रइ बातन-बातन में।
अबनइँ नेंऊँ मानत तुमसौं लगत-अकस कातन में।
जौ कजंत दै देंय बिधाता पंख हमाये तन में।
तौ उड़ ढूंड़ लियाऊँ उनकौं ऐसी आवे मन में।
हेरौं बाट रात भर भोरइ दैंओं बुजा दिया कौं।
चलन लगी जा बैर बसंती कसकन लगी जिया कौं।

---

* निश्चित तिथि

हुमक-हुमक कैं सौत परौसिन वेई गीत सुनावै।
मोय देख कैं रोज जिठानी-मनई मन मुस्कावै।
रात मींजतरँ वारौ देवरा तराँ-तराँ चमकावै।
ऐसैं रओौ ऐसैं चंदा कौं बदरइ दाबत रावै।

नये-नये रोज लगावै अनुआँ* काकऔं नंदुलिया कौं।
चलन लगी जा बैर बसंती कसकन लगी जिया कौं।

ककना हो गयँ बरा-बरा दोउ उतर टेवनिन जावैं।
गाड़े बगुँआँ घरी-घरी चुरियन सैं होड़ लगावैं।
छायँ पैंतीं भईं पैंतियाँ छिगुरीं बनीं दिखावैं।
ठुसी, लल्लरी, रुनक-रुनक दोऊ हमेज लौं आवैं।
'मित्र' तुमइँ कओौ दोष लगाऊँ बी में सुनगड़ियां‡ कौं।
चलन लगीं जा बैर बसंती कसकन लगी जिया कौं।

दोज के चंदा झँझरियन झाँकौ,
मेरो तुमइँ सैं जियरा जुड़ात।
बीतो सबइ पखवारो विसूरत,
बीती अमाउस रात।
हेरत-हेरत † डूबीं तरैयाँ,
काउ ना पूँछी बात।

---

* लांछिन ‡स्वर्ण के आभूषण बनाने वाला। †देखते-देखते

दोज के चंदा झँझरियन झाँकौ,
मेरो तुमइँ सें जियरा जुड़ात।

रातइ-दिन, इतरात ननदिया,
दतियन सास बतात।
अनुआँ लगाउत घर की जिठनियाँ,
कौनउँ बनत न कात।

दोज के चंदा झँझरियन झाँकौ,
मेरो तुमइँ सें जियरा जुड़ात।

फूल-फूल छैवलन के बिरछा,
आग लगाउत रात।
कूक-कूक जा कारी कुइलिया,
रचतइ नयो उतपात।

दोज के चंदा झँझरियन झाँकौ,
मेरो तुमइँ सें जियरा जुड़ात।

सींचत रई खेत सरसौं के,
जबइँ लखे कुमलात।
उनकेइ सुमन, देख मोय जरतइ—
नैंकउ नईं सिरात।

दोज के चंदा झँझरियन झाँकौ,
मेरो तुमइँ सें जियरा जुड़ात।

(११)

बालन पै माउठ * के मुतियाँ,
बनईं कैं उबरात।
अपनी झलक दिखाकैं—
करतइ मोरे संगै बात।
दोज के चंदा झँझरियन झाँकौ,
मेरो तुमइं सें जियरा जुड़ात।
मलय पार की बैर बसंती,
सोउत काम जगात।
'मित्र' कऔ कीसैं का कइये,
की कौ कहा पिरात।
दोज के चंदा झँझरियन झाँकौ,
मेरो तुमइँ सौं जियरा जुड़ात।

(१२)

घनर-घनर बज उठीं घंटियाँ,
जुत गयँ गड़रन खैला।
सज गयँ ज्वान महुबिया,
बाँदें रंग बिरंगे सेला।

---

* माघ की वर्षा।

अलका * नैंचें कसें कमल
पत्री, की नइ परधनियाँ ‡
सौनें की हलरई गरें
हीरन जड़ी दुलनियाँ

चल दयँ कछू गैल पगडंडी,
बाँके छैल छरारे।
जिनकी कमर कसे हैं—
गढ़ बूँदी के नगन दुधारे।

लटक रई तरवार, कँधा पै-
बँदी ढाल गैंड़ा की
होंइँ कसी तिरछी बर्छी-
की, नोंक चमक रइ बाँकी

लौलइँयनां † में लगे दुलैयन—
के, जब उठवे डोला।
जिनें देख कारे बदरन कौ,
जियरा डग-मग डोला।

बाँद-बाँद कैं घेरा गरजन-
तरजन, बरसन लागे
मनौ गाँठ धरती बादर के
धारन, जोरन लागे

---

* कुर्ता ‡ धोती † सन्ध्याकाल।

डोलन सैं बरसा में झड़-झड़—
चमकन लगीं बिजुरियाँ।
मंद-मंद धुन सें पाँवन कीं,
बाजन लगीं घुँघरियाँ।

भींजन लगीं चन्द बदनिन कीं,
नौंनीं सुरँग चुनरियाँ।
चुवत जात रँग रेजा को,
दमकत तन जैसैं मनियाँ।

चमकन लगी भाल टिकली की,
झउँ-झउँ छपक जुनैया।
उयगन लगी प्रेम रस बूँदन,
झउँ-झउँ नैन तलैया।

गाउईं राग मलार एक सुर—
सें, मिलजुल कैं गुइँयाँ।
तलैं जा रईं झूम-झूम सब,
डार गरैं गल बैइँयाँ।

तला पार सावन मेला की,
भीर भई है भारी।
खिची आन, कोउ वीरा,
चाबे, आवै वीर अँगारी।

धरैं हँतेली शीश, मुँजरियाँ,
बोई वीर सिरवावैं।
राख बैन की लाज भुजा—
अपनीं बोई पुजवावैं।

वीरन के परखन की साँचउँ—
जई होत है बेरा।
जइ बेरा परतइ बैनन पै,
पूरी आन अबेरा।

सत्र, लैंन बदलौ, जइ बेराँ,
दूर-दूर सें आवैं।
जीत जाँय कउँ तौ डोला—
अपनें संगै लै जावैं।

भौतक हो गइ देर पान कौ,
वीरा, तक मुरझानों।
जिये देख सत्रुन कौ न,
मनईं मन में मुसकानं

जौंनौं एक आन धमकौ,
नओ ज्वान महुविया वारौ।
बँदो शीश मंडील चमक रओ,
कर में नगन दुधारौ।

पान चवाओ बानैं, चउँ दिशि,
चमक उठी तरवारैं।

जित देखौ तित सैं सब,
कोऊ मारइ मार पुकारैं।

सबा पैर नौं भई तलाके,
ऊपर खूब लराई।
गये मुरक सत्रुन के मौरा,
विजय काउ नइ पाई।

पूज भुजा बैना नें बाँदी,
बिजइ वीर कौ राखी।
जीनें छाती रोन बैनीकी,
लाज सबइ बिद राखी।

सिरीं भुजरियाँ बैन बारे में,
नईं समाय कँबेला *।
'मित्र' बुँदेल खण्ड में होतइ,
ऐसौ सावन मेला।

(१३)

जा भरी ज्वानी भरी वदरिया सावन की,
को जानैं की बिरियाँ की जांगाँ बरस परै।

---

* बिना ब्याही लड़की जो धोती बाँये काँधे डालती है

† आया हुआ।

उनओ † बदरा धरती की प्यास बुजाउन कौं।
उनओ जियरा काऊ कौ जिया जुड़ाउन कौं।
उनओ चंदा रजनीं की आस पुजाउन कौं।
उनओ सूरज बेसुर कलियाँ विकसाउन कौं।

तुम स्वाँती जैसी ढरन सदा ढरिऔ जा में,
गज, मीन, काँस, कदली, चातक कौ काज सरै। जा भरी–

जा सेत जुनैया सब कौं लगतई प्यारी है।
सांचउँ चकोर कौ जीव सिराउन वारी है।
जइ कमोदनी की कलीं खिलाउन हारी है।
बरसावै बूंदें जइ इमरित उनहारी है।

पै बर तिरिया कौ मन मै करिऔ ध्यान नेक,
जो पिय वियोग में खट-पाटी लयँ परी करै। जा भरी –

जो होय सहाय न विपदा में वा बाँय * नईं।
जी में नईं पंछी बिलम सकैं वा छाँव नईं।
उर्रावै ‡ दूद न शिशु कौं लख वा माँय नईं।
वे वीर नईं जो रन चढ़ शीश कटाँय नईं।

ऊबड़-खाबड़ मारग तौ 'मित्र' अनेकन हैं,
बोइ समजदार जौ सोच समज कैं पाँव धरै। जा भरी

---

† आया हुआ। * भाई का हाँथ ‡ माँ के आँचरो से दूध का बालक को देखकर निकल आना।

(१४)

जाऊँ न माइ मैं तौ पिय की नगरिया,
मैया सी, छाँड़ कैं बाँय रे।
छोड़ी न जाँय मोसैं बारे की सखियाँ,
जिनसैं जियरा जुड़ाय रे।

खेली जिन सँग आँख मिचौनीं,
खेली धूप औ छाँय रे।
सुअटा की काँयें खेल गुड़ियन के,
तनकउँ भूलत नाँय रे। जाउँ न—

भूलैं न माई मोय तुलसी कौ बिरवा,
औ सउअन की छाँय रे।
जिनकी डारन डार हिड़ौला,
मिचकैंयाँ लै गाँय रे। जाऊँ—

भूलत नैंयाँ इमिरती के झिआ,
लहर-लहर लहराँय रे।
खरीं दुफरियँन में जँह हिआ,
अपनीं प्यास बुझाँयँ रे। जाऊँ

नईं भूलैं मोय सगुन चिरैंयाँ,
सौंनें से पंख मडाँय रे।
'मित्र' बोल बे! कोइलिया कैं,
कओ, कैंसैं बिसराँय रे।

(१५)

गज मौतिन रानी महला पै ठाड़ीं,
चौंमक दियला उजार रे।
आउत हूयें मोरे नैन सिराउन *,
समर जीत भरतार रे।

दमकै विजुरिया सी माँथे की बिंदिया,
चमकै नौलखा हार रे।
हरषै गरब सें वा कर कङ्कनन की,
मौंतिन रतन स्वार रे।

इतनें में ऊनयें ‡ पूरव दल-बादल,
घूमत देखे निसान रे।
झूमत देखे रानी गज मतवारे,
तमकत तीर कमान रे।

हिनकत देखे सबज रंग घुरवा †,
तिनपै महुबिया ज्वान रे।
प्रान जाँय पै जान न देवैं,
जे, पुरखन की आन रे।

---

* नेत्रों को ठंडक देने वाले, ‡ आये हुये † घोड़ा।

बाजत देखे रानी विजय नगारे,
जे सत्रुन उर साल रे।
फरकत देखीं रानीं विजईं भुजायें,
झलकत उन्नत भाल रे।

देख-देख रानीं जी * में जुड़ावैं,
गावैं मंगल चार रे।
आज सुहाग भयो धन, आजइं,
धन्न भये भरतार रे।

आज कूख धन, भइ सासुल की,
धन ससुरा की पागरे।
आज भये धन, धरती के वासुक,
धन्न हमाये भाग रे।

इतनें में ज्वान दुआरे पै आ गये,
बोले बचन सम्हार रे।
तिलक करौ रानीं परछन साजौ,
खोलौ झझन किवार रे।

हम ल्याये रानी विजय पताका,
जीत सत्रु संग्राम रे।
आन समारौं रानी अपनीं जा, थाती,
फिर करियो विसराम रे।

---

* हृदय।

कानन भनक परत रानीं दौरीं
खोले झाँझन किवार रे।
शीश देख रानीं दुविधा में परगईं
कहा रची करतार रे।

घर हिरदैं थिरदा * रानी बोलीं,
जागौ वीर सुभाव रे।
शीश कटत सूरन केई रन में,
पीठ न लागत घाव रे।

जौ लौं, शीश लगौ हँस बोलन,
मार-मार किलकार रे।
ना रानी हम पीठ दिखाई,
ना खाई हम हार रे।

अपनेंइ करसें अपनेइँ घर सैं,
लओ हम शीश उतार रे।
रुंड-मुंड दोउअन रन भीतर,
खूब करी तरवार रे।

जीत सत्र संग्राम परौ घर—
रानी समर मंझार रे।
तिलक कराउन रानी विजय कौ
आयौ शीश दुआर रे।

---

* स्थिर।

अब जिन सोच करौ कछु मन में,
ना मन माँय विचार रे।
तिलक करौ रानी निज सुख-मन सें,
अपनीं बाँय पसार रे।

सुन- कैं हुँमक उठी छत्रानी,
सज सोरउ सिंगार रे।
तिलक करौ, धर शीश गोद लओ
अपनौं सत्त समार रे।

दमकन लगो तेज सें देइया ‡,
चमकन लगौ लिलार रे।
पिरगट हो गई सत् पतव्रत सें,
ज्वाल माल अँगार रे।

देखत-देखत सब पिरजा * के,
देय भई जर छार रे।
'मित्र' कहैं पा गये वीर गत
दोऊ सुरग दुआर रे।

---

‡ तन * प्रजा।

(१६)

बिन्नू ! मो पै साँचउँ जे,
बैरी बदरा बरयाने ।
कौनउँ तरियाँ कितउँ,
न मौकौं सूजत ठौर ठिकानें ।

बाखर * में घुस आयो पानो,
रातें गलयारे ‡ को ।
ताय उलीचत मोय तरा †,
कढ़ आयो भुन्सारे को ।

ऐसे बरसे गॅवड़े कीं भर—
गईं हैं, सबइ खदानें ।
बिन्नू ! मो पै जे साँचउँ,
बैरी बदरा बरयानें ।

पुरा परौसी तइके ऊपर,
रातइ दिन रयँ रूठे ।
इतै-उतै की सुन कैं,
अनुआँ £ मोय लगावें भूठे ।

---

* घर ‡ रास्ता † प्रातकाल का तारा £ लांछित दोष

सास जिठानी, लाखन मोरी,
बातें क्यूँ बिन जानें।
बिन्नू! मो पै सांचउँ जे,
बैरी बदरा बरयानें।

अबै आइ मैं, भोरई सें,
उठ गइती खेत रखावे।
ज्वाँर, बाजरा के झूटन पै,
लपके सुआ भगावे।

कन्नें परी मोय रखवारी,
घर के भये बिरानें।
बिन्नू! मोपै सांचउँ जे,
बैरी बदरा बरयानें।

अबै तलक नई लगा पाइ,
मैं, बड़े खेत कौं बारी।
जी के बिना परी सबकी—
सब, मोरी धान उघारी।

कोऊ बारी कौ जमबैया,
मोय ढूड़बे जानें।
बिन्नू! मो पै सांचउँ जे,
बैरी बदरा बरयानें।

तनक दिनन में सबकौं—
परखौ, कोउ काउकौ नैंयाँ
मो दुरमीली† की कैसउँ कैं,
राखैं लाज गुसैंयाँ

'मित्र' मिलत मौसैं नित—
रइऔ, तुमसें जिया जुड़ानैं।
विन्नू! मो पै सांचउँ जे,
वैरी बदरा बरयानैं।

(१७)

बीरन! तेरे बिन कोउ नैंयाँ,
राखी कौ बँदवैया।
एक दिना सावन में रैगओ,
ल्यो सुद * मोरे भैया।

को ल्याहै मोय मोर पपीरन—
बारी छपी चुँनरिया
को कुष्टन ‡ की बनी फूल—
बेलन की, लाल घँघरिया

---

† अनाथिनी *खबर ‡ देशी वस्त्र बनाने वाले

को चंदन कौ हार माल टिकली—
की, छपक जुनैया †।
वीरन ! तेरे बिन कोउ नैयाँ,
राखी कौ बँदबैया।

कौ बँदवाहै तला तलैयाँ
अंध कुआ उघरा है।
बन की सगुन चिरैयन कौं,
को आकैं विरन ! चुना है।

कितउँ न कोउ तुम बिन—
कपलन, गैयन के बंद छुड़ैया।
बीरन ! तेरे बिन कोउ नैयाँ,
राखी कौ बँद बैया।

बाखर* ऊपर छाये बदरा,
उमड़ घुमड़ कें कारे।
सरग‡-धार सें बरसन लागे,
भर गये नदिया-नारे।

---

† चाँदी की बनी हुई जिसमें टिकली रुहज से जमा कर फिर माथे पर लगाई जाती है।

* घर। ‡ आसमान से गिरना।

झुकी आम की डार नईं—
कोउ, झूला कौ झुलवैया।
वीरन ! तेरे बिन कोउ नैंयाँ,
राखी कौ बंदवैया।

जुर-मिल दुष्मन लरन लराई,
गैंवड़े† बाहर आ गये।
बाँद-बाँद मन में मनसूवा,
खूब पमारो गायरे।

तुम बिन बाँध दुधारौ, को,
उनके मौंरा* मुरकैया‡।
वीरन ! तेरे बिन कौउ नैंयाँ,
राखी कौ बँदवैया।

भुजा उठा जो पाँच पान कौ,
बीरा आन चबावै।
वौई छाती रोप भुँजरियाँ,
मेरीं आन पुजावै।

सांचउँ "मित्र" वीर वौई,
बैना की लाज रखैया।
वीरन ! तेरे बिन कौउ नैंयाँ,
राखी कौ बँदवैया।

---

† ग्राम्य के बाहर का स्थान। * मोर्चा ‡ मोड़ देना

साँचउँ कोउ काउकौ नैंयाँ।

मोरइ सें जा कैकैं कड़ गयँ,
ढीलन जारयँ गैंयाँ।
बा* बेरा सें जा बेरा भई,
ऊँगन‡ लगी तरैंयाँ।

साँचउँ कोउ काउ कौ नैंयाँ।

अबै सुनीं काऊ सें बातें,
कर्‌रये बर की छैंयाँ।
इन सोसन से बिन्नू मोरी—
रउतीं, भरीं तलैंयाँ।

साँचउँ कोउ काउकौ नैंयाँ।

जिदना सें बाखर† में आई,
कड़ी न देरी मैंयाँ।
को जानें बे बाके संगै,
का हैं आज करैंया।

साँचउँ कोउ काउ कौ नैंयाँ।

---

* उस समय ‡ निकलना † घर।

'मित्र' जनम सें मैं जानत—
रइ, मोरे मारे सैंयाँ।
अब मोरी, पुरखन की.
लज्या, राखैं राम गुसैंयाँ।
साचउँ कोउ काउकौ नैंयाँ।

(१८)

जौ जुग सूदेपन कौ नैंयाँ।
जबलों कानाँ सूदे बरते,
फिरत फिरे फिरकैंयाँ।
टेड़े होतन सूदीं हो गइँ.
वेइ गोपीं वेइ गैंयाँ।
जौ जुग सूदेपन कौ नैंयाँ।
टेड़ी तिरछीं नदियाँ बयँ,
सब रीतें ताल तलैंयाँ।
टेड़े बिरछा डाँगन रयँ.
सूदन कैं, घलें कुल्हैंयाँ।
जौ जुग सूदेपन कौ नैंयाँ,

सूदेपन सें चाल चलै जो,
घर भर लगै डटैयाँ *।
संसारी में सूदेजन कौं,
नैयाँ कोउ पुछैयाँ।

जो जुग सूदेपन कौ नैयाँ।

राहू की टेड़े चंदा पै,
परत नईं परछैयाँ।
'मित्र' न कैसउँ घी कड़तइ,
बिन टेड़ी करैं उँगैयाँ *।

जौ जुग सूदेपन कौ नैयाँ।

✦

(१६)

अच्छर परनें ते सो पर गये।

जनम-जनम करनी के मरका *।
मरनें ते सो मर गये।
जाकी जैसी जाँगा जुतगइ,
जीनें जैसे हर नये।

---

* डाट का लगाना। * उँगली।

अच्छर परनें ते सो पर गये।

वैसेइ कुरा फूट जम निकरे,
जैसेइ बीज बगर गये।
अपनें-अपनें खेत काट कैं,
अपनें-अपनें घर गये।

अच्छर परनें ते सो पर गये।

मोंतीं मन के व्यञ्जन नाँप कैं,
भाव-कुठीलन भर दये।
जब-जब जैसे जतला रोपे,
तब-तब तैसे दर गये।

अच्छर परनें ते सो पर गये।

अगन-जुगत आहार सिद्ध कर,
'मित्र' भाव उर भर गये।
भोग-भोग कैं भव सागर सें,
नेव-नाव चढ़ तर गये।

अच्छर परनें ते सो पर जये।

* बड़े-बढ़े गढढा नींचे ऊँचे।

(२०)

जिदना सूदें हुयें गुसैंयाँ।

जो-जो मोसें एनस राखत,

बे ! सब परहैं पैंयाँ।

धीरज कबउँ न छोड़े,

ऊँगें इतकीं (उतै तरैंयाँ।

जिदना सूदे हुयें गुसैंयाँ।

अपनीं जाँग उघरतन होतइ,

जग में खूब हँसैंयाँ।

बैसइँ अपनीं लज्या होतइ,

अपनेइँ हाँत रखैंयाँ।

जिदना सूदे हुयें गुसैंयाँ।

स्वाँत बूँद तज गंगाजल कौं,

चातक नईं पिवैंयाँ।

'मित्र' खरे खोटन की होतइ

परखन त्रिपता मैंयाँ।

जिदना सूदे हुयें गुसैंयाँ।

✤

(२१)

ऊधौ का कउँ मन की बात ।

ज्यों-ज्यों नेत्र * गाँठ सुरजाउत—

त्यों-त्यों उरजत जात ।

ऊधौ का कउँ मन की बात ।

निठुअइँ ‡ उनकों मोय न मेरो ।
मोत जतन कर-कर मैं हेरो ।
सोचत कबउँ न मन अपनें में,
कोसें करिये घात ।

ऊधौ का कउँ मनकी बात । ज्यो-ज्यो—

जोग लैंन की बासें कउतइ ।
जी कों कछू न सुद बुद रउतइ ।
बौ तन जोग सादवेंकों का,
जी में अतर बसात ।

ऊधौ का कउँ मन की बात ।

जमना के रूखन की छैंयाँ ।
कौंनउँ तराँ बिसरतीं नैंयाँ ।
करत बेदना दिनें-दिनेंवा,
महारास की रात ।

---

* प्रेम ‡ बिलकुल ।

ऊधो का कउँ मनकी बात। ज्यों-ज्यों—

मुरक-मुरक कैं तिरछी हेरन,
अधरन पै बँसुरी की फेरन।
'मित्र' सुरन की बा मीठी धुन,
अबलों जिया जुड़ात।

ऊधो का कउँ मन की बात। ज्यों-ज्यों—

(२२)

रजऊ रउतइ मोरे नेंरें*।
तोऊ मोरी कोद‡ न हेरें।

मैं सत् गयँ बैठी घर मैंयाँ—
जाउँ न मेंरे-तेरें।
माया-वन्तीं तिरियाँ रउतीं,
रोजइँ उनकों घेरे। रजऊ—

मैं पुरखन की लज्या कों लयँ,
पैरों नदि‌या गैरें।
देखो किदिना 'मित्र' गुसैंयाँ,
सैंयाँ कौ मन फेरें।

रजऊ रउतइ मोरे नेरें।
तोऊ मोरी कोद न हेरें।

---

* नजदीक ‡ ओर।

(२३)

साजन साँची देव बताई।
रातै निदिंया कित बिलमाई।
बिन गुन-माल गरे में पैरैं।
माहुर भाल दिखाई।
नैना अलसानैं से होरये,
रये मन-भेद जताई। साजन—
निठुआँ * फीकीं परगइ रजुआ,
अधरन की अरुनाई।
बिथुरे 'मित्र' पेंच पगिया के,
गईं मुख-दुत कुमलाई।
साजन साँची देव बता
रातें निदिया कित बिलमा

(२४)

मन अनमनें रउत उदना सें।
खबर सुनीं जिदना सें।
कौंन बात राधाजू कैदइ,
खेलत में किसना सें।

---

* बिलकुल।

उनकी बाखर * टेरन मैं गइ,
कइ अपनें अँगना सें।
नेंक न माँनीं मौतक ‡ मैं कइ,
पूंछ लेव जमना से।
को दोहै अव अपनीं गैयाँ,
'मित्र' बिना लिवना † सें।
मन अनमनें रउत उदना सें।
खबर सुनीं जिदना सें।

(२५)

कँुवर राधका आकैं।
कैगइँ गुँइयन सें समझाकैं।
ऊधो की सेवा सब मिलजुल,
करियो सबइ तराँ कैं।
मक्खन, मठा, दई, गैया कौ,
मीठो दू प्यआ कैं।
'मित्र' ज्ञान सुन्नें का उनकौ,
अपनों चित्त लगाकैं।

---

* घर ‡ बहुत सी † गाय के पैरौं में बाँधने की रस्सी ।

करिये बिदा नेव † को सूदो,
साँचो पाठ पढ़ाकैं।
कुंवर राधका आकैं।
कैगईं गुंइयन सें समजाकैं।

(२६)

जे नईं आईं पाँउनीं झाँकीं।
झँझरिन में हो झाँकी।
फँदक-फुँदक मुनियाँ सी कर रईं,
केहर से करहा कीं।
गुना * बनक मुंयाँ सुवनासी—
नाक, हरन नैंना कीं।
टैय्या ‡ बड़ो कछोटा मारैं,
रूप रंग में बाँकीं।
'मित्र' दूर सें निरखत रैय्यौ,
हैं बश करन जिया कीं।
जे नईं आईं पाँउनीं झाँकीं
झँझरिन में हो झाँकीं

---

† प्रेम। * रहन वद्ध हुआ आभूषण
‡ धोती को दांये ओर से सिर सें लपैटना।

(२७)

राधे भईं कबसें ब्रजरानीं।
सोचत रात सिरानीं।

हम तुम दोऊ संग लगनियाँ,
एक घाट कौ पानी।

राधे भईं कबसें ब्रजरानीं।
... ...

सात भाँवरन कीं दोउ में सें,
कोउ नैंयाँ पटरानी।

राधे भईं कबसें ब्रजरानीं।
... ...

'मित्र' रात-दिन बिरथाँ तड़पै,
हमसों रूओ रिसानीं।

राधे भईं कबसें ब्रजरानीं।
... ...

(२८)

राधे कैसीं तुम ठकुरानीं।
बिनईं मोल बिकानीं।

लुरूँ-लुरूँ करतीं फिरतीं हौ
काँगइ बान पुरानीं।
राधे कैसीं तुम ठकुरानं
... ...

अबै तलक कुठिया* में गुर-
फोरत रईं, काउ न जानीं।
राधे कैसीं तुम ठकुरानं
... ...

'मित्र' कहैं कउँ उतर न जावै,
जौ मोंतीं सौ पानीं।
राधे कैसीं तुम ठकुरानं
... ...

---

* मिट्टी का बना कच्चा पात्र।

(२६)

नैना दिखा-दिखा कजरारे।
कान करदये कारे।

माखन चिखा चटोरा करदयँ,
गुल्चा खाँय बिचारे।

नैना दिखा-दिखा कजरारे।
... ...

गूजर जात तकत ऊजर
मैं, काँतक‡ गाँउ पमारे†।

नैना दिखा - दिखा कजरारे।
... ...

'मित्र' राधका वारेइ सें तैं
ऐसे गजब गुजारे।

नैना दिखा - दिखा कजरारे।
... ...

---

‡ कहाँ तक। † बहुत से यशों का वर्णन।

(३०)

कउतीं बँदुआ कान हमाये।
कुबरी टौना कर बिलमाये।

गूजर जानत पड़ा परख,
का परखै गज-मतवाये।

कउतीं बँदुआ कान हमाये।

....

हीरा खुरसें रईं खुटी में
मुँदरी नईं जड़ाये।

कउतीं बँदुआ कान हमाये।

....

'मित्र' सबइ सें स्याम सलौनें
कबउँ न कंठ लगाये।

कउतीं बँदुआ कान हमाये।

(३१)

राधे नेव * कहा तुम जानों।
कई हमाई मानों।
जैसें परत वटेर ‡ हाँत में,
मन मुसकावै कानों।
राधे नेव कहा तुम जानों।
....
किसा तुमाई बई मई हैं;
परछुत देउँ कहानों।
राधे नेव कहा तुम जानों।
....
'मित्र' कऊँ बरसत रये पानू
आखिर मिलै निमानों †।
राधे नेव कहा तुम जानों
....

---

* प्रेम ‡ एक तीतुर के रंग का छोटा पक्षी
† अन्तिम समुद्र में।

(३२)

राधे कैसीं रईं चिमाकैं।
कश्रौ उजागर आकैं।

अबै तलक अपने भों, बातें
कउत रईं मिठयाँ
राधे कैसीं रईं चिमाकैं।

....

सब जानत करतूत तुमाई,
नइँ हम कउत बनाकैं।
राधे कैसीं रईं चिमाकैं।

'मित्र' कॉन कों रईं नचाउत,
चुरश्रन छाँच प्याकैं।
राधे कैसीं रईं चिमाकैं।

(३३)

राधे कैसीं गुनकीं सकला,
खूब मचारइँ घपला।

जाँगन-ताँगन बजरऔ तुमरौ,
बदनामी कौ ढपला *।

राधे कैसीं गुनकीं सकला।

....

हो तुम बिन्द्रावन कीं चजरउ,
हम दासी अत कपला।

राधे कैसीं गुनकीं सकला।

....

'मित्र' कहैं अब चमक न पैहै,
चाल तुमाई चपला।

राधे कैसीं गुनकीं सकला।

....

---

* एक वाद्य।

(३४)

चन्दा लगत शरद् कौ नीकौ।
समुदा-पूत वीर-कमला कौ,
दुक्ख दैन मौज़ी कौ।
चढ़ो ईश के शीश पुजत है,
वल-पा पारवती

चन्दा लगत शरद् कौ नीकौ।
औगुन मौत एक गुन जामैं,
दाता बड़ो अमी कौ।
हार तरैंयन कौ पैरें है,
सुख सुहाग रजनी

चन्दा लगत शरद् कौ नीकौ।
पँथिन कौं विसराम देत है,
चोरन लागत फीकौ।
साँचौ सुक्ख दैन भोगिन कौ,
चैन चकोरन जी

चन्दा लगत शरद् कौ नीकौ।
सब कोउ जाकौं कउतइ सरवस,
कमोदिनी के ही कौ।
'मित्र' सदाँ चरनन कौ चेरौ
राजाराम धनी कौ।
चन्दा लगत शरद् कौ नीकौ।

(३५)

रे पंच्छी तिसना की डाँगन में, भटकत मुतके दिन बीते।
फल की इच्छा सें बिरछन कौं,
मुलकन * देखीं डार डरैंयाँ।
करमन सें जो मिले उनें—
दयें, छोड़ तकीं फिर ताल तलैंयाँ
सबरई घाली चोंच तऊ रयँ अरे पेट रीते के रीते।
रे पंच्छी...
अपनेंइँ जात पाँत के पच्छिन कौं,
कर पीछें आँगें दौरे।

---

* बहुत सी

कितनन कौं घायल कर पंजन—
विदो-विदो समुदा में बोरे।

तइपै तेरी मरी न मंसा इतने करम करे तें लीते
रे पंच्छी..

संसारी के बन में आये,
भारी-भारी पंखन बारे।
उड़त-उड़त पंखा सब झर गये,
पार न पाऔ तब मन हारे।

तइपै तैं कउतइ जा जग में हम सब सें निठुआँ * अनर्च
रे पंच्छी..

जा सें जो सैज ‡ मिल जावे,
बइसें तिरपत ‡ हौकैं रइये,
'मित्र' सत्र कौ भेद भुला कैं,
पनमेसुर की कीरत गइये।

कभउँ न मन अपनें में सोचे काम क्रोध कों हमनें जी
रे पंछी तिसना की डाँगन में भटकइ भुत के दिन बी

---

† बुरे। * बिलकुल ‡ तृप्त।

(३६)

रे मनुआँ! बिन करम करैं, तरवे की फूँटी आशा तेरी।
जो कजँत * की अवकी विरियाँ,
भ्रमना में तें मरमत रैहै।
तो फिर तेरौ संगी साती,
कितउँ न कोऊ एक दिखै हैं।
खोटे पूरब के करमन की घिर आई चउँ ओर अँधेरी।
रे मनुआँ ....
तिसना के भरकन ‡ में परकैं,
कितऊँ जौ ;जी मटकत रैहै।
पर चौरासी, जौंनन में इत-उत,
जौ जियरा तरसत रैहै।
जासौं अबकीं बिरियाँ कैसउँ, होन न पावै तनकउँ देरी
रे मनुआँ ....
मानुस करम करत में कौनउँ,
फल की ना राखै अभलखा।।
और न पुन्न करे कौ माखै
अपनें मौंसें अपनों साखा।

---

* कहीं ‡ नीचे ऊँचे गढ्ढे।

दया-वर्द नैया में बांदै नदिया पार हौन कौं गैरी
रे पंच्छी..

थिरदा * सें धर ध्यान हरी कौ,
अन्तस मन सें कीरत गइये।
अरपन उनकेइ करम धरम कर,
काऊ के नइँ दोरें जइये।

इन लच्छिन सें मिलत 'मित्र' अन पाउन भक्ती मुक उजेरी
रे मनुआँ..

✦

(३७)

अब मन रामइँ में अनुरागौ।
माया के झूठे चक्कर में,
नाहक इत-उत भागौ।
अपनोंई सुख अपनोंई दुःख,
मानत रऔ अभागौ।

---

* स्थिर।

अब मन रामइँ में अनुरागौ।
कबउँ न करम धरम कौं चीनौं
कबउँ न गओ पिरागौ।
जब देखौ तब दाँत निकारैं,
पेट भरन कौं माँगौं।
अब मन रामइँ में अनुरागौ।
पूरब कौ कछु पुन्न उदै भओ,
सोउत—सोउत लागौ।
राम नाम अन्तस में मिद गओ,
जैसैं सुइ में धागौ।
अब मन रामइँ में अनुरागौ।
तिसना की डाँगन में बिदकैं,
फार लओ सब बागौ।
'मित्र' भोर कौ भूलो भटकौ,
सँजा गाँवड़े लागौ।
अब मन रामइँ में अनुरागौ।

(३८)

कउतइ अब कोउ नईं हमारौ।
तौ हीरा सौ अब तक तैंनें,
बिरथाँ जीवन गारौ।
अपनोंई सुख अपनोंई दुख,
हरदम जियें बिचारौ।

कउतइ अब कोउ नईं हमारौ।
मन में अबै तलक मानत रऔ,
अपनौं पुंजी पसारौ।
अपनों कुआ सबइ सें मीठौ,
और सबन, कौ खारौ।

कउतइ अब कोऊ नईं हमारौ।
अपनीं करनीं सब सें नौनीं,
अपनों नोंनों द्वारौ।
अपनों गुनत लगाकें अपनों,
तकत रऔ उजयारौ।

कउतइ अब कोउ नईं हमारौ;
हटकत 'मित्र' रये बा बिरियाँ *,
तब रऔ करत किनारौ।
जब इन्द्रिन नें ज्वाब दै दऔ,
तब कैरऔ मैं हारौ।
कउतइ अब कोउ नईं हमारौ।

---

* उस समय।

३९

जौ पन्द्रा अगस्त कौ दिन सांचउँ सौंनें कौ मैया।
जौई जन्नीं के पाँवन की बेड़ी कौ कटवैया ॥

जइके लानैं लरी लराई झाँसी बारी रानी।
सब कोउ जानत सन्तावन की विपता मरी कहानी।

बीर बहादुर साह कटादये जइकौं अपनें छैया।
जौ पन्द्रा अगस्त कौ दिन सांचऊँ सौंनें कौ मैया।

खुदीराम, जोगेन्द्र, फिरेते जइकौं बनें दिमानै।
रास बिहारी बोष जईकौं माटी मोल विकानैं।

भगतसिंह नें जइकौं लइती फाँसी की मिचकैया *।
जौ पन्द्रा अगस्त कौ दिन सांचऊँ सौंनें कौ मैया।

तिलक, पटैल, मालवी ने जइके लानैं तन गारौ।
गाँधी जी नें जइ के लानैं सत्त शान्त ब्रत धारौ।

बीर जवाहर जइकौं छोड़ी फूलन की सुख सैया।
जौ पन्द्रा अगस्त कौ दिन सांचउँ सौंने कौ मैया।

विन्ती इतनी मित्र 'मित्र' की सुन लइऔ चित धरकैं।
जा "स्वतंत्र भारत" की रछा करिऔ सब मिलजुरकैं।

जौ कउँ बिगरी बात कितउँ फिर नैंयाँ कोउ पुछैया।
जौ पन्द्रा अगस्त कौ दिन सांचउँ सौंनें कौ मैया।

---

* झूला का झोका।

४०

ओ धरती के पूत ! जग उठो,
जगे सुरजमल भैया ।
वीरन कौं करनी करबे कौ,
सांचऊँ जोइ समैया * ।

तुमरेइ लानैं बापू ! नें भारत,
सुतन्त्र है कर दओ ।
गाँव और पर गाँवन में,
जननीं के जस कौं भर दओ ।

बा फैले भये जस के सांचउं,
तुमई एक रखवैया ।
ओ धरती पूत जग उठो,
जगे सुरजमल भैया ।

समुद-रूप बन भेद छोड़,
हरजन कौं हिरदैं भेलौ ।
उमयौ ज्वार तरंगण सें,
चन्दा के संगैं खेलौ ।

बन नौं कौनउँ तराँ देश कौं,
पूँछा † भार तरैया ।
ओ धरती के पूत जग उठो,
जगे सुरजमल भैया ।

---

* समय † केतु, उड़न तस्तरी

अंगद कैसौ समा माँय,
तुम रोपौ पाँव बिचारौ।
डिगौ न कैसउँ आवें संकट,
कौनउँ तरौं अँगारौ।

सुक्ख शान्त की तब आहै,
घर-घर में सीता मैया।
ओ धरती के पूत जग उठो,
जगे सुरजमल्ल भैया।

लगी तुमारेई भविष्य पै,
आँख सबइ काऊ की।
तुम्मेंइँ छिपी शक्ति गाँधी की,
औ पटैल दाऊ की।

तुमइँ सुभाष, जवाहर ढेवर,
श्री पट्टाभि रमैया।
ओ धरती के पूज जग उठो,
जगे सुरजमल भैया।

तुमइँ कल्पना हौ तुल्सी की,
तुमइँ सूर की बानी।
तुमइँ गूढ़ केशव की कविता।
तुमइँ कबीरा ज्ञानी।

तुमइँ गीत मीरा अन्तस के,
गिरधर प्रान रखैया।
ओ धरती के पूत जग उठो,
जगे सुरजमल भैया।

तुमइँ जोत लक्ष्मीबाई की,
छत्रसाल कौ पानी।
श्री जगदीशचन्द्र बसु तुमईं,
तुमइँ रमन विज्ञानी।

तुमइँ विवेकानन्द, विश्व में,
भारत कौं चमकैया।
ओ धरती के पूत जग उठो,
जगे सुरजमल भैया।

❖

अपनें घरकी अपनें हाँतन,
बात बनायें रइऔ।
बिगर न पावै तन-मन-धन सें,
होड़ लगायें रइऔ।

भारत नैया के निठुअँईं * हो,
तुमईं एक खिवैया
ओ धरती के पूत जग उठो,
जगे सुरजमल भैया।

बड़ा उर्वरा शक्ति धरा की,
खूब अन्न उपजाऔ।
'मित्र' हवा, पानी, के नौनें,
नये विमान बनाऔ,

बनौं राष्ट्र रच्छा कीं लछमन—
रेखा के खिचवैया।
ओ धरती के पूत जग उठो,
जगे सुरजमल भैया।

---

* बिलकुल ही।

(

गईं गाँवन के भैया हो, भारत की नैया के तुमइँ खैन हार

समुद करूरश्रौ भेदन सें घोर।

ज्वार रूपी ऐनस * को जोर।

पवन के झोका देत झकोर।

परी तिसना की मोंर-मरोर।

डूब न जावै कौनउँतरियाँ ‡ बननइऔ पतवार।

गईं गाँवन के भैया हो, भारत की नैया के तुमइँ खैनहार

झाँझरी नाव दूर है तीर।

स्वारथी मगरन की भइ भीर।

न जानत जे काऊ की पीर।

मछैंया बनकैं भईं अधीर।

सेवा विरत डाँढ़ के बल से, कर दइऔं तुम पार।

गईं गाँवन के भैया हो, भारत की नैया के तुमइँ खैन हार

अकस † मकसन नें डारौ रेद।

हो गये जी सें लाखन छेद।

सबइ कों जी कौ हो रओ खेद।

आइऔ छोंड़-छोड मत-भेद।

---

† असमंजस

तुरतइँ करो मरम्मत जी सौं होवे बेड़ा पार।
गईं गाँवन के भैया हो, भारत की नैया के तुमइँ खैन हार।
तुमइँ सें हैं सबई विन्त्वार।
न करियौ भैया नेंक अबार।
न हिरदे में कछु सोच विचार।
करौ जो देर न कड़ है सार।
मान 'मित्र' की कइ जुर मिलकें लीऔ जाय उबार।
गईं गाँवन के भैया हो भारत की नैया के तुमइँ खैन हार।

(४२)

त्योहारन में दसरये कौ,
त्योहार सबइ सें नौंनों।
जई दिना धरती फूलत,
सूरज बरसाउत सौंनों
तिलक चड़ाउन की जइ दिन कौ,
जग में प्रथा पुरानी।
जई दिना खौ नौं मइँना कौं,
गर्भ धरत छकानी।

जई दिना खों आउत है,
बीरन पै नई जुवानी।
जई दिना खों धरो जात है,
तरवारन पै पानी।

जई दिना बउएं धरतीं हैं,
घर-घर में दसरैयाँ।
जई दिना घर-घर मे पूजी;
जातीं सगुन चिरैयाँ।

जई दिना सब कोऊ पूजत,
है, ठैंकुर कौ विरऔ।
जई दिना सब कोऊ पूजत,
अपनें—अपनें घुरुवा।

जई दिन नीलकंठ कऊँ उड़,
दायें सैं बायें जावै।
सत्र विजय कौ राज्ञा फिर—
नईं, कौनउँ सगुन मनावै।

जइ-दिन पूजत बैन बाँय—
है, वीर विजइ मैया की।
जइ-दिन परखन होत जगत में,
राव और रैया की।

जई दिना दुर्गा ने दानव,
शुंभ निशुंभ विदारौ।
जई दिना छत्रा ने औरंग,
कौ नौं रंग बिगारौ।

जई दिना के लानें भयेते,
राम—लखन बनबासी।
लंक विजयकर, समर माँय,
मारौ रावन अघरासी।

वैर भाव कौं विसर 'मित्र'
जइ दिन खौं रतौ करनीं,
करनी की, देई, देवतन सौं,
कीरत जाय न वरनीं।

(४३)

ओ धरती के पूत! जग उठो,
जगे सुरज मल भैया।
संत बिनोवा! तुमें जगारये,
नौंनों आव समैया।

औँड़ रजाई पँचमैं.ा सैं,
उतरौ नैंचैं आऔ।
डरौ टपैया में धनुआ की,
दसा देख तौ जाऔ।

करत खुसामद कैउ जुगन सैं,
जोड़ी तुमाये घर की।
आमद कछु ऊपर की नैयाँ,
रोटी बोइ गजर की।

ठिठुर रऔ देदो उतरन की,
जाकौं एक कतैया।
औ धरती के पूत जग उठो,
जगो सुरजमल भैया।

मानीं नौनीं अपनीं सबकौं,
लगतइ है घरवारी।
कछू हर्ज नइँ बाय रोज,
पैराऔ मूना सारी।

दै मोचो दुरजन सैं सेवा,
करनइ द्वारेवारी *।
मौत समारत तन, देखौ,
तउ हो-हो जात उघारी।

तनक सरम कर साव! सिमादों,
बाकौं एक धँधैयाँ।
ओ धरती के पूत जग उठो,
जगें सुरजमल भैया।

दूद लुचइँयन कौं तुम बाँदें,
दोरैं ‡ दहस गैयाँ।
और तुमाये हरबारे कौं,
नैंयाँ चार कुचैंयाँ।

चड़े अटाई पै तुम उत—
गरमीं में झूलौ झूला।
परौ बमुरिया तरैं दुफरिया,
में, इत तपै गदूला।

* मेंतरानी ‡ द्वार।

घर उसरा नइँ सइ बनवादो,
बाकौं एक ट[illegible]या।
ओ धरती के पूत जग उठो,
जगे सुरजमल भैया।

बुतत तुमायें मुलकन* जाँगा,
तइपै डरी अपरती ‡।
सरत रउत बंडन में जुनरी,
बइकी कछू व जरती।

टुँडा के मोंड़ा नौं नैंयाँ,
एकउ बीगा धरती।
दै दो बाकौं गुजर-बसरकौं,
परी भूम जो परती।

मान 'मित्र' की कइ लिखवालो,
खातें नाव दिवैया।
ओ धरती के पूत जग उठौ,
जगै सुरजमल भैया।

❖

---

* बहुतसी ‡ जिनका पार नहीं।

(४४)

बिदा की कीनैं बेल वई।
मिलकर बिछुरन की नई नौंनी,
जग में नीत दई *।

बिदा की कीनैं बेल वई।

शरद जुनैयासी, बारी ननदिया की,
चमक रई उनई ‡।
बिदा की कीनैं बेल वई।

झिलमिल होंय बेदियाँ, कानन,
करन-फूल छवनई।
बिदा की कीनैं बेल वई।

केशन-सैंदुर नाँय राहु कैं—
शशि नैं साँग हई।
बिदा की कीनैं बेल वई।

---

* दैव ‡ माथे की बैंदी।

सोहत शीश फूल ता ऊपर
रविगत मंद भई।
बिदा की कीनैं वेल वई।

झमकै बदरिया सी नैंन तलैंयन—
बैनन ! धाय * दई।
विदा की कीनें वेल वई।

बिरन ! मसोस ‡ मनई मनराये,
ज्यों नैनू माँय मई।
विदा की कीनैं वेल वई।

झलनन, पलनन कीं गुइँयनकी,
नईं कछु जात कही।
विदा की कीनै वेल वई।

"मित्र" परोसिन के अँसुअन सैं
धरती भींज गई।
बिदा की कीनैं वेल वई।

---

* ऊँचे स्वर से रोना ‡ जबरदस्ती रोकना।

ले॰ रामचरण ह्यारण "मित्र"

लौलेयाँ

लेखक

रामचरण हयारण 'मित्र'

भूमिका—

श्री व्योहार राजेन्द्रसिंह

प्रकाशक :—

ज्ञानमन्दिर

[illegible]य प्रेस, जबलपुर।

१९५७

मुद्रक :—
साहित्य प्रेस, साठिया कुआ
जबलपुर.

मूल्य ७५ नये पैसे

प्राप्तिस्थान :—
मानस मन्दिर, साहित्य प्रेस
जबलपुर.

दो-शब्द

स्व० श्री मुन्शी अजमेरी जी से सन् १९२४ में जन-कवि ईसुरी की फागें सुनने का सर्व प्रथम अवसर मुझे कोंठ ग्राम्य में मिला था। मैं वहाँ एक कवि सम्मेलन में गया था। कविता पढ़ने के पश्चात् जब मैं अपने स्थान पर आया, तो एक भद्र पुरुष जो कि देखने में मथुरा के चौबे सदृश लगते थे, अपने सहज-स्वभाव से मुस्कराते हुये बोले, "भैया तैनें भौतइ नौंनीं कविता सुनाई और कउँन तो सबसे नौंनीं लगी" मैं समझ गया कि यही मुन्शी अजमेरी होंगे। मैंने उन्हें श्रद्धा से प्रणाम किया और बैठ गया।

सम्मेलन समाप्त होने के बाद चाय के दौरान में एक वृद्ध पुरुष ने मुन्शी जी से ईसुरी की एक फाग सुनाने का आग्रह किया। वे तपाक से बोले "एक नइँ दउ।" फिर क्या था? उनकी मधुर कण्ठ ध्वनि से कमरा गूंज उठा। फाग की "जिन जाव बिदेसी दिन थोरौ।"

यहीं से मुझे बुन्देलखण्डी से प्रेम और उसके शब्द माधुर्य का ज्ञान प्राप्त हुआ, उस थोड़े समय के परिचय के ही कारण जब कभी मुन्शी जी झाँसी आते तो मेरे घर अवश्य आते, और अपनी बुन्देलखण्डी किस्सा कहानियाँ और ईसुरी की फागें अपने सहज स्नेह वश घंटों सुनाया करते। उनके कहने का ढँग इतना आकर्षक था कि बाल-वृद्ध किसी का भी मन नहीं ऊबता।

उनका यह दावा था कि बुन्देलखण्डी भाषा में ब्रजभ
से अधिक माधुर्य है। और जब कभी वे साहित्यिक दृष्टिकोण
ब्रज के रसिया और बुन्देलखण्डी फागों की विवेचना करने ल
तो साहित्य प्रेमी मंत्र मुग्ध हो जाते।

उसी समय के श्रवण किये हुए भाव, समय पाकर
कवि हृदय में अंकुरित हो पनप उठे, जो कि श्री गिरजाकुमार
माथुर तथा श्री रामउजागर जी द्विवेदी के स्नेह द्वारा अधिक
लखनऊ रेडियो द्वारा प्रसारित हुये। वे ही "लौलैंया" नाम
प्रस्तुत हैं।

संसार में लौलैंयाँ की बेला सभी को प्रिय लगती है। इ
समय में दूर-दूर से पक्षी तथा-पथिक गण विश्राम लेने अप
अपने निवास स्थान में आ जाते हैं। वास्तव में इस काल में
जड़-चेतन सभी जीवों को विश्राम मिलता है।

मेरा विश्वास है कि लौलैंयाँ के कुछ क्षण बाद ही चन्द्र
का उदय होगा, जो कि अपनी सुधा-मयी किरणों द्वारा साहि
प्रेमियों के हृदय को सिक्त करेगा।

सुप्रसिद्ध साहित्य सेवी श्री व्योहार राजेन्द्रसिंह जी जो
जबलपुर के प्रमुख राष्ट्रीय नेता भी हैं, उन्होंने "लौलैंयां"
अपनी यशस्वयी लेखनी द्वारा भूमिका लिखकर तथा इस
प्रकाशन भार वहन कर मुझे जो प्रोत्साहन दिया है उसका
उनका हृदय से आभार प्रदर्शित करता हूँ।

विनीत—

रामचरण हयारण 'मि

भूमिका

बुन्देलखण्डी और ब्रजभाषा इन दोनों में कौन अधिक मधुर है, इसके विषय में मतभेद हो सकता है, किन्तु दोनों ही युगों से सगी बहिनों के समान पास पास रहतीं और फूलती फलती आई हैं। मध्य-काल में दोनों ही में महाकाव्यों की रचना हुई है। यदि ब्रजभाषा को सूरदास, देव और बिहारी पर गर्व है तो बुन्देली को भी केशवदास पद्माकर और लाल कवि पर अभिमान है।

लोक भाषा होने के कारण लोक गीतों और लोक गाथाओं में लोक कवियों ने अपने हृदय के उद्गार प्रगट किये है। जनता के अत्यधिक निकट होने के कारण ये लोकगीत जनता के हृदय की भावनाओं को प्रगट करने में सबसे अधिक समर्थ हुए हैं। आधुनिक काल में लोक कवि ईसुरी ने जनता के हृदय को सबसे अधिक प्रभावित किया है। क्योंकि इन्होंने जनता की घरेलू बोली—वाणी में जनता की खेत-खलियान घर-द्वार, प्रेम और विरह की बातें बड़े सीधे सादे ढंग से कही हैं। श्री गौरीशंकर जी द्विवेदी ने उनके लोक गीतों का संग्रह और सम्पादन बड़े ही परिश्रम से किया है (मानस मन्दिर से प्रकाशित ईसुरी प्रकाश प्रथम भाग द्रष्टव्य)

उनसे प्रभावित होकर मेरा ध्यान बुन्देलखण्डी के सहज-माधुर्य की ओर गया। इस बीच रेडियो पर कभी-कभी श्री

रामचरण ह्यारण 'मित्र' द्वारा प्रसारित लोक गीतों को सुन का अवसर भी मिलता रहा, जिससे यह बात सिद्ध हो गई इस युग में भी बुन्देलखण्डी में सुन्दर काव्य-रचना हो सक है। बुन्देलखण्ड साहित्य सम्मेलन (झांसी) के अवसर प उनके मुख से जब प्रत्यक्ष रूप से उनके लोकगीतों को सुन का अवसर मिला तब उनका माधुर्य और भी बढ़ गया। पन्ना हुए बुन्देलखण्ड हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अवसर पर कवि गोष्ठी में उनकी सरस काव्य रचना ने समा ही बां दिया था। फलस्वरूप एक छोटा सा यह काव्य संग्रह पाठक के हाथ में है।

जिन पाठकों की मातृ-भाषा बुन्देलखण्डी नहीं है उन लिए इस संग्रह में आए हुए सौकारूं, लोलैयां, गोसली उरैयां और ठिकोला आदि शब्द कुछ अनोखे से लगेंगें किन्तु ह लोग जो नित्य ही इन शब्दों को सुनते बोलते हैं उनको इ शब्दों में विशेष आनन्द आवेगा। क्योंकि इनमें जो विशेष अ भरा हुआ है वह अन्य शब्दों द्वारा व्यक्त ही नहीं किया ज सकता। नित्य बोलचाल की भाषा में जो सरसता और मधुरत है वह दूसरी भाषा में मिलना कठिन है। जो बातें इस बोली स्वाभाविक है हैं ही खड़ी बोली में कृत्रिम सी जान पड़ती हैं साहित्यिक दृष्टि से चाहे उन पर ग्रामीणता का दोष भले ही लगाया जावे किन्तु उसके साथ घरेलूपन और आत्मीयता का गुण भी स्वीकार करना पड़ेगा।

"लोलैयाँ" के प्रथम गीत ही में जो कि प्रेमपूर्ण घरेलू

वातावरण है वह खड़ी बोली में अनुवाद करने से मिट सा जाता है।

बड़ी बहिन उसमें अपने छोटे भाई को बड़े ही प्रेम पूर्ण शब्दों में जगा रही है। "बीरन" शब्द में आत्मीयता मानों भरी पड़ी है। प्रातःकाल का सरस वातावरण इस पंक्ति में मानों मूर्तिमान हो उठा है :—

"बीरन हो रओ भोर,
दूद सी डूबन लगी तरैयां।"

ताराओं की दूध की उपमा शुभ्रता की दृष्टि से सुन्दर लगती है। इसी प्रकार ऋतुओं का सौन्दर्य भी इन गीतों में उतरा है। शरद ऋतु का सौन्दर्य "धुव गई नभ की सुरंग चुनरिया' में उज्ज्वल हो उठा है और श्रावण की घन घटा— "सावन की जा झपक जुनैया," में घिर आई है। वर्षा और विरह का मानों निकट का सम्बंध है। इस घन घटा के घिरते ही विरहीगण अपना सन्देश भेजना शुरू कर देते हैं। कालि-दास से लेकर ग्रामीण कवि तक उसमें सम्मिलित हैं जो कि बुन्देलखण्डी में अपना सन्देश भेजते हैं :—

"इतनी बिरन सों बदरवा जा कहियो,
बैना बिलखे बमूरा की छांह।"

कवि केवल "गांव पुरा की बातें" ही नहीं कहता किन्तु सारे बुन्देलखण्ड की गौरवगाथा गाता है। "जो बुन्देलखंड को गाउत जावे चलो पमारो।" उसके हृदय में केवल वर्षा ऋतु ही हूक नहीं जगाती वरन बसन्ती बयार भी हृदय में कसकती है।

चलन लगी जा बैर बसन्ती,
कसकन लगी जिया को।"

कवि की वाणी में विरह का स्वर इतना प्रबल है कि वह सारा कृष्ण-पक्ष विरह में बिताता है। नव चन्द्रोदय को देखकर मानों उसके हृदय में आशा की क्षीण रेखा उदय हो जाती है।

दोज के चन्दा झिंझरियन झांको
मेरो तुमई से जियरा जुड़ात।

केवल विरह और शृंगार ही नहीं किन्तु वीरकाव्य में आल्हा के देश में उत्पन्न होने के कारण बुन्देलखण्ड के कवि वीरता के आह्वान भी नहीं भुला सकते :—

"बँदो शीश मन्डील,
चमक रओ कर में नगन दुधारो।

पढ़कर आल्हा की भुजरियों की लड़ाई याद आ जाती है। बुन्देलखण्ड के समर विजेताओं का स्वागत करने के लिए उनकी वीरपत्नी के हृदय में जो भावना उत्पन्न होती है उसी उत्साह से पति के वीरगति के प्राप्त होने पर सती होने को उद्यत हो जाती है—

"जीत सब संग्राम परो घर,
समर मंझार रे।

तिलक कराउन रानि विजय को,
आओ शीश दुआर रे ॥
सुनके ठुमक उठी क्षत्राणी,
सजा सोरऊ सिंगार रे ।
तिलक करो, धर शीश गोद लओ,
अपनो सत्त संवार रे ॥

यदि पति पत्नी के पवित्र प्रेम में इस त्याग और बलिदान की प्रबल भावना है तो बहिन और भाई के प्यार में एक और ही विचित्र सरलता और मधुरिमा है ।

राखी (रक्षा बन्धन) का समय समीप आ रहा है । और भाई बहुत दूर है, अतः बहिन उसे एक व्याकुल संन्देश भेजती है:—

"वीरन तोरे बिन कोउ नैया,
राखी को बँदवैया ।
एक दिना सावन को रे गओ,
लो सुध मोरे भइया ॥

'मित्र' जी के छन्दों की मधुरता के साथ शब्दों की उपयुक्त योजना विशेष दृष्टव्य है । इसके साथ ही साथ, उनकी मुहावरेदार भाषा पाठक को तुरन्त प्रभावित करती है ।

जैसे— (१) "हम तुम एक घाट के पानी ।

× × ×

(२) अब तक कुठिया में गुर फोरत रई कोउ न जानी

× × ×

(३) गूजर जात तकत ऊजर में कां तक गांव पमारे ।'

× × ×

(४) जैसे परत बटेर हात में मन मुसकावे कानों ।"

× × ×

"मित्र जी" ने कई पदों में कई सुन्दर अन्योक्तियाँ भी कही है ।

रे पंछी विसना की डांगन में,
भटकत मुतके दिन बीते ।

"रे पक्षी तृष्णा की घाटियों में तुझे बहुत दिन बीत गये ।" मित्र जी के इस छन्द में दर्शन का भाव आ गया है ।

कहीं कहीं तो मित्रजी ने संतों के समान अपने मन को सम्बोधन किया है:—

"अब मन रामई में अनुरागो !"

तो एक सच्चे देश भक्त के समान देश के नवयुवकों को भी उद्‌बोधन किया है । वे कह उठे है :—

"जो पन्द्रह अगस्त को दिन,
साँचऊ सोने को भइया।
ओ धरती के पूत जग उठो,
जगे सूरजमल्ल भैया ॥"

इस प्रकार "छौलैयां" में हयारण जी ने बुन्देली बोली में बुन्देलखण्ड के ग्रह जीवन, ग्रामीण वातावरण, प्राचीन वीरता की परम्परा और आधुनिक राष्ट्रीयता का संदेश देने को अपनी सरस लेखनी से सफल प्रयत्न किया है। आशा है, इससे बुन्देलखण्डी भाषा भाषियों को काव्य के साथ जीवन की सरलता और सरसता का एक मधुर सन्देश मिलेगा।

गुरु पूर्णिमा
व्योहार भवन,
जबलपुर।

ब्योहार राजेन्द्रसिंह

तोलैंयाँ

(१)

बीरन ! हो रओ भोर दूद मीं डूबन लगीं तरैंयाँ । बीरन..

बड़ी भुजाई नें बखरी कौ,

टाल टकोरा रलओ ।

माते जू ' के बड़े कुआ कौ,

मीठो पानी भलओ ।

मुरगन्नें दइ बाँग डरैंयन बोलीं स्याम चिरैंयाँ । बीरन ..

मानकुँवर ! नें सारन कौ सब,

कूरा करकट भर लओ ।

दूद देत गैंयन भैंसन कौं,

दन्नौ दर कैं धर दओ ।

सौंकारूँ कर लेव गोसिली लगीं रमाउन गैंयाँ । बीरन...

नन्नीं बऊनें दोउ माँवन कौ,

दई माँ लओ मथरो ।

जुनइ रखाउन हरियन सें,

डरुआ ! खेतन कौं डगरो ।

कहा करैंयाँ हो अँगना में आगइं ऐन उरैंयाँ * । बीरन...

---

* प्रातकाल की सूर्य की किरणें ।

मउआ बीनन कढ़गओ पनुआँ,
लैकैं बड़ो ढिकौला‡।
मीक माँगवे आगओ-
दोरें बो साढ़ू हर बोला।
जो कनंगा† को झंडा मानों डेरो खोल किबैयाँ। बीरन ..
आलस छोड़ होत भ्याँनें,
कर लेय काम जो अपनें।
'मित्र' सदइँ बो सुक्ख उठावै,
दुक्ख न आवै सपनें।
मोय छोड़ कैं नैयाँ भैया कोऊ तोय जगैयाँ।
बीरन! हो रओ भोर दूद सीं डूबन लगीं तरैंयाँ।

(२)

धुवगइ नभ की सुरँग चुनरिया,
गइ बदरन की बरात।
बे! नइँ आये शरद्रित आई,
की सौं कहा बसात। धुवगइ...
गईं पुखरियाँ रीत बीत गये,
नदियन के उतपात।
सूखन लगी गैल पगडंडी,
सिरस निरस भयँ पात। धुवगइ ..

---

‡ कागज और मिट्टी से बना हुआ। † यदि कहीं।

राधा कॉन्हा, हर सिंगार की,
डारन लिपटत जात।
फूलन लगौ मोय लख कें,
जा, बुरइ काँस की जात। धुवगई ..

किरकिचयाऊ, मनई मन में,
फूल -- फूल इतरात।
जुगन - जुगन को नेव - मूल,
संखा हून्नी इठलात। धुवगई...

अपनें फूँटे मद में भूले,
हिन्ना ऊलत रात।
मार -- मार नेनन की सैनें,
खंजनियाँ ढुकजात। धुवगई

बिन्ध्य पारियन छिटकन--
लागी, सेत जुनैया रात।
चन्दा किरनन सें कमोदनी,
मिल मस्कई मुस्कात। धुवगई...

कौन - कौन की, का - का कइये,
की सैं की की बात।
'मित्र' भये अपनें नई बेई,
जिनसें जिया जुड़ात। धुवगई...

❖

(३)

अछरू माँतन के मेला सें निकरौ इक बँजारौ।
जो बुन्देल खण्ड को गाउत जावै चलौ पमारौ।
सुनतन बोल कुआ की बोली चतुर एक पनिहारी।
रूप रंग की नोंनीं बोली कोइल की उनहारी।

इतनी बात बतायें जइयो ओ भैया गॅल्लारे।
कौन बरन बुँदेल भूम है कैसे है गलयारे।
आड़े परे पहार गैल में कर्रये जाँ रखवारी।
सोंन, धसान, बेतवा, चम्बल की जाँ छब अनयारी।

कैसे ताल तलैयाँ कैसे झिंआ, नदिया नारे।
फूलन लगे करोंदीं के कउँ देखे बिरवा बारे।
बौर भार मे दबीं लमछरीं नोंनीं आम डरैयाँ।
देख परी कउँ राम–नाम लेतन वे सगुन चिरैयाँ।

झाँसी और महोबा, कालींजर कौ गढ़ अत भारौ।
देखो का तुमने आला ऊदल कौ नगन दुधारौ।
जगनिक कौ आल्हा, लक्ष्मीबाई कौ साकौ बांचौ।
जी में बीरन की गाथा कौ खिचौ चित्र है सांचौ।

फागें सुनीं ईसुरी की कउँ रामायन तुलसी की।
सुनीं कितउँ केशव की कविता हरन हार जो जीकी
चित्रकूट के का रूखे रूखन कीं देखीं छैंयां।
जाँ बसकें अपनी विपता निरबारी राम गुसैंयाँ।

हरसिंगार सें लिपटीं राधा कान्हा की बेलैंयाँ।
तिनकी डारन डार हिंड़ोला मिचकीं लैरइँ गुइयाँ।
[illegible]उआ मेवा बेर कलेवा, गुलगुच बड़ी मिठाईं।
पुरखन सें जा सुनीं कहाउत जी भरकें का खाईं

:❖:

(४)

सावन की जा झपक जुनैया, ऐसी मोय दिखात है।
जैसें बूड़ी कारी नागिन डंसन चहत अधरात है।

सॉंजइ सें पुरवैया बैरइ,
मेरो जिया डरात है।
घिर आये जे कारे बदरा,
हौन लगी बरसात है।
जे बुँदियाँ तिरछे तीरन सीं,
घाव करैं मो गात है।
मोरे सैंयाँ घर में नैंयाँ,
मोरी कौन बसात है।

सावन की जा झपक जुनैया ऐसी मोय दिखात है।
जैसें बूड़ी कारी नागिन डँसन चहत अधरात है।

जामुन की झुरमुट में पपिहा,
पिया, पिया बतरात है।
जी की बोली सुन-सुन मेरौ,
मन जौ बैठन जात है।
जइपै कूक - कूक कोइलिया,
आमन पै इठलात है।
कोउ संगानी मेरो नैयाँ,
बिन्नू कैसी बात है।
सावन की जा झपक जुनैया ऐसी मोय दिखात है
जैसें बूड़ी कारी नागिन डँमन चहत अधरात है
दोउ कँगारे दाव बेतवा,
घर्र - घर्र घर्रात है।
आड़े परे पहार बीच में,
कोउ न आउन जात है।
को बँदवाहै 'वन्नू तेरी-
राखी, दाँयें हात है।
कैसैं मिरहैं 'मित्र' भुजरियाँ,
मौकौं जौ संताप है।
सावन की जा झपक जनैया ऐसी मोय दिखात है
जैसैं बूड़ी कारी नागिन डँमन चहत अधरात है

गाँव-पुरा की बातें

(५)

अपनें मोंज मजे में सबकों अपनीं-अपनीं रातें।
वैसइ नांनी हमकौं अपनें गाँव पुरा कीं बातें।
सब काऊ कौं लगतइ मीठी बोली मोहनियाँ की।
चाल चलन में कोउ नइ समसर कर पाउत धनियाँ की।

रनक झमक भल्यावै पानी गुयिँयाँ दकैं टैया
कोयल कठ सोहर गा सनियाँ सोंगावै भैया।
भाँ कैं मठा जसुदिया सींकन सें भरल्यावै भौंना।
नौंन डार कैं सबै प्यावै भर-भर दो-दो दोंना।

दै कैं मोंन गकरियाँ पै काकी धनुआँ कौं टेरै।
दूद-मीड़ खवावै पुचकारै हांत पीठ पै फेरै।
ऐसौ सूदो सरल भाव साँचउँ सुरगउ में नैयाँ।
जी की साक भरन कौं संजा कौं नित उगें तरैयाँ।

तन कइ दूर पुरा सें भीठं पानीं कीं पचकुँइयाँ।
दयें कछोटा हिल-मिल पानी भरवे जातीं गुइँयाँ।
ईंगुर बरन बेस लरकैंयाँ बदुआ कैसी मुँइयाँ।
चंदन हार गरे में परैं बगुआ हाँतन सैंयाँ।

सूरज सामें पचकुँयन के मढ़ माँतन कौ मारी।
जो बिरसिंग देव जू कीं हैं हाँतन कीं पौंड़ारी।

गँवड़े बाहर बाहर मटउ पारिया पै छैंकुर कौ बिरवा।
जी की डारन बैठ किलोलें करत चिरैयाँ चिरवा।

चैत-चाँदिनो की छव हर्‌रइ छिटकी शंखा हूली।
भरी "इमिरती" समुदा सी जी में कमोदनी फूली।
इन फूलन संग लहरन में चंदा की किरने सूलें।
जिनकी आँख मिचौनीं लख-लख विरहिन के मन ऊलें।

बिनइ दुर्ग लक्ष्मीबाई की गारओ अमर कहानी।
सन् सन्तावन में जाँ उतरौ गोरंडन कौ पानी।
तोप कड़क विजली के गोलन के भये हैंइ धमाके।
हैंइ भये बल-दान भूम पै वीर बाँकुरे बाँके।

तला बीच लक्ष्मी जू कौ नइ जी की अकथ कहानीं।
देखन बनन आज लगैं जी की कारीगरी पुरानीं।
तराँ-तराँ के तला पार पै उड़रयँ सुआ परेवा।
अठखंभा के काजें लगतइ रोज हैंइ सें खेवा।

करयाँ पानी बीच पैरबो कछू सीख रये मौंड़ा।
कछू बाँस [illegible] य खे रये किश्ती कछू चलारये डोंड़ा।
कछू पालती मार-मार कैं दैरये ऐन मुटारैं।
कछू लगा गोता धरती की लैवौ थांयें विचारैं।

"छत्तसाल" की जरइ टौरिया नये तला के आँगैं।
जहाँ करौंदों के फूलन के मंद झकोरा लागैं।
सत्र विजय कौ हैंइ चढ़ो तो बुँदेलन पै पानीं।
जी को वरनन कर पवित्त हो गई 'मित्र' की वानीं।

(६)

इतनी बिरन सौं बदरवा जा कइओ,
बैना बिलखैं बमूरा की छाँय।

उजर गई निठुआइ फुल बगिया,
क्यारिन जमीं कुनाँय।
गुबरीला सुख भोगैं भौंरा,
नीमन पै मड़राँय।

इतनी बिरन सौं बदरवा जा कइओ,
बैना बिलखैं बमूरा की छाँय।

खेत खान बिरवारी लागी,
हरवारे घबराँय।
सगुन चिरैयँन की कर,
हरिया, सकुच लौट घर आँय।

इतनी बिरन सौं बदरवा जा कइओ,
बैना बिलखै बमूरा की छाँय।

बुरइ पीर परवस की होतइ,
बुरइ कूर की बाँय।
मेड़ पूँछ गै भादों नदिया,
कोउ पार नइँ जाँय।

इतनी बिरन सौं बदरवा जा कइऔ,
बैना बिलखै बमूरा की छाँय।

दो टूंका धरती के हो गये,
की कौं लख हरखाँय।
बिछुड़ गये मैयन सैं मैया,
कैसैं जिया जुड़ाय
इतनी बिरन सौं बदरवा जा कइओ,
बैना बिलखै बमूरा की छाँय।
हम जानी कछु हती और,
भइ दसा कछू जग माँय।
'मित्र' तुमइँ कओ कौन तराँ,
अब अपनी लाज बचाँय
इतनी बिरन सौं बदरवा जा कइओ,
बैना बिलखै बमूरा की छाँय।

⁂

(७)

हँस दैलये भँझर किबार सजन!
ककना बनवा देव सौनें के।
बारे देवरा ने दुलरी लैदइ
रुच गढ़ दई सुगर सुनार
सजन! ककना बनवादेव सौनें के। हँस—
ननदेउआ ने बिछिया लैदं
पग धरत होत झनकार

सजन ! ककना बनवादेव सौंनें के । हम—

जेठी ननदी नें चंदन हार दओ,
मेरे जोवन कौ सिंगार ।

सजन ! ककना बनवा देव सौंनें के । हम—

तीन वचन मोय हारियो,
तब निकरन ! दैहौं द्वार ।

सजन ! ककना बनवादेव सौंनें के । हँस—

'मित्र' सजन हस गैलई,
तोपै जाउँ धना ! बलहार ।

सजन ! ककना बनवा देव सौंनें के । हँस—

(८)

गलयारे ! झपक आई साँज,
अँगारूँ डाँग करोंदा की भारी ।
जी में रहत दलाँकत नाँर,
तुपकयन* जी जाँजर हिम्मत हारी ।
चौंकै चिरइ न फरकत बार,
न फूटत तीर विकट ऐसी आरी ।
तइनै आड़े परे हैं पहार,
फड़ी तिन फोर वेतवा मतवारी ।

---

* बन्दूक चलाने वाले ।

देखौ दावत आवै कगार,
घोर कर घहरै विन्ध्याचल वारी।
छाई भर भाँदों की रैन,
घिरी चउ ओर अमावस अँधयारी।

मेरो देवर न घर में रा
जिठानी, मौत दिनन सें है न्यार
वे ! कौनउँ कउत न बा
करौं में चाँय सेत चाय कार

तुम हैंइँ करौ विसराम,
वड़ी बरिया नर लो डेरा डारी।
नइँ कौनउँ चिन्ता करौ,
करौं मैं रान तुमाई रखवारी।

दोऊँ अमइँ बाखिरी मैं
कराऊँ अपनें हाँतन सैं ब्यार
पीओ निर्मल ठंडो नी
भरी सींकन‡ सें जा भंभन भारी

भुन्सारैं लियो घर गैल,
'मित्र' जब जाय कुआ कौ पनहारी।
तुमरो नोंनों देख सुभाव,
करी तुमसें मैंनें जा विन्तवारी।

‡ मुँह से भरा पात्र।

(६)

काय विनगुत कीं बातन माँय,
रोज बीदे रःतइ उठ भोर।
द्रोपदी के पट के उनहार,
परत जिनकौ कछु ओर न छोर।

परोसी वड़े गाँव के राव,
निठल्ले जिनें काम नइं धाम।
कमाई करी कराई धरी,
फुला रये जी पै बैठे चाम।

तुमाये गरैं आठ जी बँदे,
रोज जिनकौ कन्ने निर्वाव।
करन मैं मैन्त मजूरी जात,
तुमइ सोइ उठ कछु रचौ उपाव।

सुन् लई पंछी करत न काम,
न अजगर करन चाकरी जाँय।
करमहीनन की जा कानात,
करम बिन करैं न कोऊ खाँय।

तुमाई जा फूलन सी देय,
झुरस गई तनक ध्यान तो देव।
निहोरे से कररइ दिन रात,
लगाबौ छांड़ चरस कौ देव।

चित्त ना चिन्ता कौनउँ करौ,
बिना भुगते नइँ कटनें पाप।
गाँठ में नइँ राखत जब मूल,
ब्याज कौ करतइ काय विलाप।

धरौ हिरदे में थिरदा नेंक,
आलसिन कौ जू छोड़ो संग।
करौ तुम लाख जतन नइँ कड़ें,
छैवलन के पत्तन में रंग।

परख कैं 'मित्र' मित्रता करो,
जई सब कउतइ वेद-पुरान।
न चलतइ पड़ा बैल कौ जोत,
बात सुन लेव खोल कैं कांन।

पुरष पारष की माया होत,
करत जे पोरख हैं दिन रात।
उनइँ कौं देत सहारौ राम!
उनइँ कौं देत लक्ष्मी सात।

उठो जू! हार रखावन जाव,
चिरैयाँ चुन कउँ लाँय न खेत।
तनक सी भूल गरइ हो जात,
खेत में लगा लगत है रेत।

कऔं मैं एक मरम की बात,
देब उठतनइँ जान निज धरम।

बड़ी बिटिया को कन्नें ब्याव,
कंवेंता में जियं लगतइ शरम।

जनम – पत्री कों धरदो खुस,
करम – पत्री पै कर विश्वास।
करो मनियाँ के पीरे हाँत,
जौन महना में मिलै उकाम।

राम दय देत कनूका चार,
करौ तौलों लरका की खोज।
जोर कें नाते रिस्तेदार,
भाँवरें फेर उतारो बोज।

होय जिनकें सिक्कन कौ चलन,
नईं उनमें कन्नें व्योहार।
अगाड़ू और काम हैं धरे,
न लैंने कौड़ी एक उधार।

राख हैं बे! पुरखन की लाज,
नाव हरदौल लला को लेव।
जोर कर, कन्या अरपन करौ,
पाँव पखरइ में गैया देव।

होत जितनी तिरिया की बुद्ध,
कई हम उतनी तुमसें बात।
करौ नौंनीं जो तुमकौं लगै,
देवें में सबइ तराँ सैं सात।

पिछाड़ूं भूल चूक देव डार,
करइ कउँ लगै हमाई बात।
पैल जो होत नीम सी करइ,
पिछाड़ूं बइ गुर सी गुरयात।

❖

(१०)

चलन लगी जा बैर बसंती कसकन लगी जिया कौं।
करौं कहा तुमऊ कओौ गुइयाँ उनके धरे टिया कौं*।
जे छेवले के फूल भीतरइँ भीतर आग लगावैं।
और बौर आमन के रग-रग सोउत काम जगावैं।
फूल करोंदी के भुन्सारें ऐसौ देंय झकोरा।
जी झौका सें सिकुर-सिकुर तन हो-हो जात ककोरा।
धरै करेजो कूक, टूंक का करदउँ कोइलया कौं।
चलन लगी जा बेर बसंती कसकन लगी जिया कौं।
अबै तलक मैं जो जी राखैं रइ बातन-बातन में।
अबनइँ नेकउँ मानत तुमसौं लगत-अकस कातन में।
जौ कजंत दै देंय बिधाता पंख हमाये तन में।
तौ उड़ ढूंड़ लियाऊँ उनकौं ऐसी आवे मन में।
हेरौं बाट रात भर भोरइ दैऔं बुजा दिया कौं।
चलन लगी जा बैर बसंती कसकन लगी जिया कौं।

---

* निश्चित तिथि

हुमक-हुमक कैं सौत परौसिन वेई गीत सुनावे।
मोय देख कैं रोज जिठानी-मनई मन मुस्कावै।
रात भींजतरँ बारौ देवरा तराँ-तराँ चमकावै।
ऐसैं रऔ ऐसैं चंदा कौं बदरइ दावत रावै।

नये-नये रोज लगावै अनुआँ* काकऔं नंदुलिया कौं।
चलन लगी जा बैर बसंती कसकन लगी जिया कौं।

ककना हो गये बरा-बरा दोउ उतर टेवनिन जावैं।
गाड़े बगुँआँ घरी-घरी चुरियन सैं होड़ लगावैं।
छायें पैंती भईं पैंतियाँ छिगुरीं बनीं दिखावैं।
ठुसी, लल्लरी, रुनक-रुनक दोऊ हमेज लौं आवैं।
'मित्र' तुमइँ कऔ दोष लगाऊँ बी में सुनगड़ियां‡ कौं।
चलन लगी जा बैर बसंती कसकन लगी जिया कौं।

दोज के चंदा भँझरियन झाँकौ,
मेरो तुमइँ सैं जियरा जुड़ात।
बीतो सबइ पखवारो विसूरत,
बीती अमाउस रात।
हेरत-हेरत † डूबीं तरैयाँ,
काउ ना पूँछी बात।

---

* लांछिन ‡स्वर्ण के आभूषण बनाने वाला। †देखते-देखते

दोज के चंदा झँझरियन झाँकौ,
मेरो तुमइँ सें जियरा जुड़ात।

रातइ-दिन, इतरात ननदिया,
दतियन सास बतात।
अनुआँ लगाउत घर की जिठनियाँ,
कौनउँ बनत न कात।

दोज के चंदा झँझरियन झाँकौ,
मेरो तुमहँ सें जियरा जुड़ात।

फूल-फूल छैवलन के बिरछा,
आग लगाउत रात।
कूक-कूक जा कारी कुइलिया,
रचतइ नयो उतपात।

दोज के चंदा झँझरियन झाँकौ,
मेरो तुमइँ सें जियरा जुड़ात।

सींचत रई खेत सरसौं के,
जबइँ लखे कुमलात।
उनकेइ सुमन, देख मोय जरतइ—
नैंकउ नईं सिरात।

दोज के चंदा झँझरियन झाँकौ,
मेरो तुमइँ सें जियरा जुड़ात।

---

(११)

बालन पै माउठ * के मुतियाँ,
बनईं कैं उबरात।
अपनी झलक दिखाकैं—
करतइ मोरे संगै बात।
दोज के चंदा झँझरियन झाँकौ,
मेरो तुमइं सें जियरा जुड़ात।
मलय पार की बैर बसंती,
सोउत काम जगात।
'मित्र' कऔ कीसैं का कइये,
की कौ कहा पिरात।
दोज के चंदा झँझरियन झाँकौ,
मेरो तुमइँ सौं जियरा जुड़ात।

(१२)

घनर-घनर बज उठीं घंटियाँ,
जुत गयँ गड़रन खैला।
सज गयँ ज्वान महुबिया,
बाँदैं रंग बिरंगे सेला।

---

* माघ की वर्षा।

अलका * नैचें कसे कमल
पत्री, की नइ परधनियाँ ‡
सौंनें की हलरई गरे ।
हीरन जड़ी दुलनियाँ

चल दयँ कछू गैल पगडंडी,
बाँके छैल छरारे।
जिनकी कमर कसे हैं —
गढ़ बूंदी के नगन दुधारे।

लटक रई तरवार, कँधा पै-
बँदी ढाल गेंड़ा की
होंइँ कसी तिरछी बर्छी-
की, नोंक चमक रइ बाँकी

लौलइँयनं† में लगे दुलैयन—
के, जब उठवे डोला।
जिनें देख कारे बदरन कौ,
जियरा डग-मग डोला।

बाँद-बाँद कैं घेरा गरजन-
तरजन, बरसन लागे
मनौ गाँठ धरती बादर के
धारन, जोरन लागे

---

* कुर्ता ‡ धोती † सन्ध्याकाल ।

डोलन सैं बरसा में झड़-झड़—
चमकन लगीं बिजुरियाँ।
मंद-मंद धुन सें पाँवन कीं,
बाजन लगीं घुँघरियाँ।

भींजन लगीं चन्द बदनिन कीं,
नौंनीं सुरँग चुनरियाँ।
चुवत जात रँग रेजा को,
दमकत तन जैसैं मनियाँ।

चमकन लगी भाल टिकली की,
झउँ-झउँ छपक जुनैया।
उयगन लगी प्रेम रस बूँदन,
झउँ-झउँ नैन तलैया।

गाउइँ राग मलार एक सुर—
सें, मिलजुल कैं गुइँयाँ।
तलैं जा रईं झूम-झूम सब,
डार गरैं गल बैइँयाँ।

तला पार सावन मेला की,
भीर भई है भारी।
खिची आन, कोउ वीरा,
चाबे, आवै वीर अँगारी।

धरैं हँतेली शीश, भुँजरियाँ,
बोई वीर सिरवावैं।
राख बैन की लाज भुजा—
अपनीं बोई पुजवावैं।

वीरन के परखन की साँचउँ—
जई होत है वेरा।
जइ वेरा परतइ बैनन पै,
पूरी आन अवेरा।

सत्र, लैंन बदलौ, नइ वैराँ,
दूर-दूर सैं आवैं।
जीत जाँय कउँ तौ डोला—
अपनें संगै लै जावैं।

मौतक हो गइ देर पान कौ,
वीरा, तक मुरझानों।
जिये देख सत्रुन कौ न,
मनईं मन में मुसकान

जौंनौं एक आन धमकौ,
नओ ज्वान महुविया वारौ।
बँदो शीश मंडील चमक रओ,
कर में नगन दुधारौ।

पान चवाऔ बानैं, चउँ दिशि,
चमक उठी तरवारैं।

जित देखौ तित सैं सब,
कोऊ मारइ मार पुकारैं।

सवा पैर नौं भई तड़ाके,
ऊपर खूब लराई।
गये मुरक सत्रुन के मौंरा,
विजय काउ नइ पाई।

पूज भुजा बैना नें बाँदी,
विजइ बीर कौ राखी।
जीनें छाती रोप बैनीकी,
लाज सबइ बिद राखी।

सिरीं भुजरियाँ बैन वारे में,
नई समाय कँदेला *।
'मित्र' बुँदेल खण्ड में होतइ,
ऐसौ सावन मेला।

(१३)

जा भरी ज्वानी भरी बदरिया सावन की,
को जानैं की बिरियाँ की जांगाँ बरस परै।

---

* बिना ब्याही लड़की जो धोती बाँये काँधे डालती है

† आया हुआ।

उनओ † बदरा धरती की प्यास बुजाउन कौं।
उनओ जियरा काऊ कौ जिया जुड़ाउन कौं।
उनओ चंदा रजनीं की आस पुजाउन कौं।
उनओ सूरज बेसुद कलियाँ बिकसाउन कौं।

तुम स्वाँती जैसी ढरन सदा ढरिऔ जा में,
गज, मीन, काँस, कदली, चातक कौ काज सरै। जा भरी–

जा सेत जुनैया सब कौं लगतई प्यारी है।
सांचउँ चकोर कौ जीव सिराउन वारी है।
जइ कमोदनी की कलीं खिलाउन हारी है।
बरसावै बूंदें जइ इमरित उनहारी है।

पै बर तिरिया कौ मन मै करिऔ ध्यान नेक,
जो पिय वियोग में खट-पाटी लयँ परी करै। जा भरी –

जो होय सहाय न विपदा में वा बाँय * नईं।
जी में नईं पंछी बिलम सकैं वा छाँव नईं।
उरांवै ‡ दूद न शिशु कौं लख वा माँय नईं।
वे वीर नईं जो रन चढ़ शीश कटाँय नईं।

ऊबड़-खाबड़ मारग तौ 'मित्र' अनेकन हैं,
बोइ समजदार जौ सोच समज कैं पाँव धरै। जा भरी

† आया हुआ। * भाई का हाँथ ‡ माँ के आँचरो से दूध का बालक को देखकर निकल आना।

(१४)

जाऊँ न माइ मैं तौ पिय की नगरिया,
मैया सी, छौंड़ कैं बाँय रे।
छोड़ी न जाँय मोसैं बारे कीं सखियाँ,
जिनसैं जियरा जुड़ाय रे।

खेली जिन सँग आँख मिचौनीं,
खेली धूप औ छाँय रे।
सुअटा की काँयें खेल गुड़ियन के,
तनकउँ भूलत नाँय रे। जाउँ न—

भूलै न माई मोय तुलसी कौ बिरवा,
औ सजअन की छाँय रे।
जिनकी डारन डार हिंड़ौला,
मिचकैंयाँ लै गाँय रे। जाऊँ—

भूलत नैंयाँ इमिरती के झिआ,
लहर-लहर लहराँय रे।
खरीं दुफरियँन में जँह हिआ,
अपनीं प्यास बुझाँय रे। जाऊँ

नईं भूलैं मोय सगुन चिरैंयाँ,
सौंनें से पंख मडाँय रे।
'मित्र' बोल बे! कोइलिया कै,
कओ, कैंसैं बिसराँय रे।

❖

(१५)

गज मौतिन रानी महला पै ठाड़ीं,
चौमक दियला उजार रे।
आउत हूयें मोरे नैन सिराउन *,
समर जीत भरतार रे।

दमकै विजुरिया सी माँथे की बिंदिया,
चमकै नौलखा हार रे।
हरषै गरब सें वा कर कङ्कनन की,
मौंतिन रतन स्वार रे।

इतनें में ऊनयें ‡ पूरब दल-बादल,
घूमत देखे निसान रे।
झूमत देखे रानी गज मतवारे,
तमकत तीर कमान रे।

हिनकत देखे सबज रंग घुरवा †,
तिनपै महुबिया ज्वान रे।
प्रान जाँय पै जान न देवैं,
जे, पुरखन की आन रे।

---

* नेत्रों को ठंडक देने वाले, ‡ आये हुये † घोड़ा।

बाजत देखे रानी विजय नगारे,
जे सत्रुन उर साल रे।
फरकत देखीं रानी विजईं भुजायें,
झलकत उन्नत भाल रे।

देख-देख रानीं जी * में जुड़ावें,
गावैं मंगल चार रे।
आज सुहाग भयो धन, आजईं,
धन्न भये भरतार रे।

आज कूख धन, भइ सासुल की,
धन ससुरा की पागरे।
आज भये धन, धरती के वासुक,
धन्न हमाये भाग रे।

इतनें में ज्वान दुआरे पै आ गये,
बोले बचन सम्हार रे।
तिलक करौ रानीं परछन साजौ,
खोलौ झझन किवार रे।

हम ल्याये रानी विजय पताका,
जीत सत्रु संग्राम रे।
आन समारौं रानी अपनीं जा, थाती,
फिर करियो विसराम रे।

---

* हृदय।

कानन भनक परत रानीं दौरीं
खोले झाँझन किवार रे।
शीश देख रानीं दुविधा में परगईं
कहा रची करतार रे।

घर हिरदैं थिरदा * रानी बोलीं,
जागौ वीर सुभाव रे।
शीश कटत सूरन केई रन में,
पीठ न लागत घाव रे।

जौ लौं, शीश लगौ हँस बोलन,
मार-मार किलकार रे।
ना रानी हम पीठ दिखाई,
ना खाई हम हार रे।

अपनेंइ करसें अपनेइँ घर सें,
लओ हम शीश उतार रे।
रुंड-मुंड दोउअन रन भीतर,
खूब करी तरवार रे।

जीत सत्र संग्राम परौ घर—
रानी समर मंझार रे।
तिलक कराउन रानी विजय कौ
आयौ शीश दुआर रे।

---

* स्थिर।

अब जिन सोच करौ कछु मन में,
  ना मन मॉंय विचार रे।
तिलक करौ रानी निज सुख-मन सें,
  अपनीं बाँय पसार रे।

सुन- कैं हुँमक उठी छत्रानी,
  सज सोरउ सिंगार रे।
तिलक करौ, धर शीश गोद लओ
  अपनौं सत्त समार रे।

दमकन लगो तेज सें देइया ‡,
  चमकन लगौ लिलार रे।
पिरगट हो गई सत् पतव्रत सें,
  ज्वाल माल अँगार रे।

देखत-देखत सब पिरजा * के,
  देय भई जर छार रे।
'मित्र' कहैं पा गये वीर गत
  दोऊ सुरग दुआर रे।

---

‡ तन   * प्रजा।

(१६)

बिन्नू ! मो पै साँचउँ जे,
बैरी बदरा बरयाने।
कौनउँ तरियाँ कितउँ,
न मौकों सूजत ठौर ठिकानें।

बाखर * में घुस आयो पानी,
रातें गलयारे ‡ को।
ताय उलीचत मोय तरा †,
कड़ आयो भुन्सारे को।

ऐसे बरसे गँवड़े कीं भर—
गईं हैं, सबइ खदानें।
बिन्नू ! मो पै जे साँचउँ,
बैरी बदरा बरयानैं।

पुरा परौसी तइके ऊपर,
रातइ दिन रयँ रूठे।
इतै-उतै की सुन कैं,
अनुआँ £ मोय लगावें झूठे।

---

* घर ‡ रास्ता † प्रातःकाल का तारा £ लांछित दोष

मास जिठौनौं, लाखन मोरी,
बातैं क्यॅं बिन जानैं।
बिन्नू! मो पै सांचउ जे,
बैरी बदरा बरयानैं।

अबै आइ मैं, भोरई सें,
उठ गइती खेत रखावे।
ज्वाँर, बाजरा के भूटन पै,
लपके सुआ भगावे।

कन्नें परी मोय रखवारी,
घर के भये बिरानें।
बिन्नू! मोपै सांचउँ जे,
बैरी बदरा बरयानें।

अबै तलक नईं लगा पाइ,
मैं, बड़े खेत कौं बारी।
जी के बिना परी सबकी—
सब, मोरी धान उघारी।

कोऊ बारी कौ जमबैया,
मोय ढूड़बे जानें।
बिन्नू! मो पै सांचउँ जे,
बैरी बदरा बरयानें।

तनक दिनन में सबकौ—
परखौ, कोउ काउकौ नैंयाँ
मो दुरमीली† की कैसउँ कैं,
राखैं लाज गुसैंयाँ

'मित्र' मिलत मौसैं नित—
रइऔ, तुमसें जिया जुड़ानैं।
विन्नू! मो पै सांचउँ जे,
वैरी बदरा बरयानैं।

(१७)

बीरन! तेरे बिन कौउ नैंयाँ,
राखी कौ बँदवैया।
एक दिना सावन में रैगओ,
ल्यो सुद * मोरे भैया।

को ल्याहै मोय मोर पपीरन—
बारी छपी चुँनरिया
को कुष्टन‡ की बनी फूल—
बेलन की, लाल घँघरिया

---

† अनाथिनी *खबर ‡ देशी वस्त्र बनाने वाले

को चंदन कौ हार माल टिकली—
की, छपक जुनैया †।
बीरन! तेरे बिन कोउ नैयाँ,
राखी कौ बँदबैया।

कौ बँदवाहै तला तलैयाँ
अंध कुआ उघरा है।
बन की सगुन चिरैयन कौं,
को आकें बिरन! चुना है।

कितउँ न कोउ तुम बिन—
कपलन, गैंयन के बंद छुड़ैया।
बीरन! तेरे बिन कोउ नैयाँ,
राखी कौ बँदबैया।

बाखर* ऊपर छाये बदरा,
उमड़ घुमड़ कें कारे।
सरग‡-धार सें बरसन लागे,
भर गये नदिया-नारे।

---

† चाँदी की बनी हुई जिसमें टिकली रुहज से जमा कर फिर माथे पर लगाई जाती है।

* घर। ‡ आसमान से गिरना।

झुकी आम की डार नईं—
कोउ, झूला कौ झुलवैया।
वीरन! तेरे बिन कोउ नैयाँ,
राखी कौ बंदवैया।

जुर-मिल दुष्मन लरन लराई,
गोंवड़े† बाहर आ गये।
बाँद-बाँद मन में मनसूवा,
खूब पमारो गायरे।

तुम बिन बाँध दुधारौ, को,
उनके मौरा* मुरकैया‡।
वीरन! तेरे बिन कौउ नैयाँ,
राखी कौ बँदवैया।

भुजा उठा जो पाँच पान कौ,
बीरा आन चबावै।
वौई छाती रोप भुँजरियाँ,
मेरी आन पुजावै।

सांचउँ "मित्र" बीर वौई,
बैना की लाज रखैया।
वीरन! तेरे बिन कौउ नैयाँ,
राखी कौ बँदवैया।

---

† ग्राम्य के बाहर का स्थान। * मोर्चा ‡ मोड़ देना

साचउँ कोउ काउकौ नैयाँ ।

मोरइ सें जा कैकैं कड़ गयँ,
ढीलन जारयँ गैयाँ ।
बा* बेरा सें जा बेरा भई,
ऊँगन‡ लगी तरैयाँ ।

सांचउँ कोउ काउ कौ नैयाँ ।

अबै सुनीं काऊ सें बातें,
कर्‌ये बर की छैयाँ ।
इन सोसन से बिन्नू मोरीं—
रउतीं, भरीं तलैयाँ ।

सांचउँ कोउ काउकौ नैयाँ ।

जिदना सें बाखर† में आई,
कड़ी न देरी मैयाँ ।
को जानें बे बाके संगै,
का हैं आज करैया ।

सांचउँ कोउ काउ कौ नैयाँ ।

---

* उस समय ‡ निकलना † घर ।

'मित्र' जनम सें मैं जानत—
रइ, मोरे मारे सैंयाँ।
अब मोरी, पुरखन की.
लज्या, राखैं राम गुसैंयाँ।

साचउँ कोउ काउकौ नैंयाँ।

(१८)

जौ जुग सूदेपन कौ नैंयाँ।
जबलों कानाँ सूदे बरते,
फिरत फिरे फिरकैंयाँ।
टेड़े होतन सूदीं हो गइँ.
वेइ गोपीं वेइ गैंयाँ।

जौ जुग सूदेपन कौ नैंयाँ।

टेड़ी तिरछीं नदियाँ बयँ,
सब रीतें ताल तलैंयाँ।
टेड़े बिरछा डाँगन रयँ.
सूदन कैं, घलें कुल्हैंयाँ।

जौ जुग सूदेपन कौ नैंयाँ,

सूदेपन सें चाल चलै जो,
घर भर लगै डटैयाँ *।
संसारी में सूदेजन कौं,
नैयाँ कोउ पुछैयाँ।

जो जुग सूदेपन कौ नैयाँ।

राहू की टेड़े चंदा पै,
परत नईं परछैयाँ।
'मित्र' न कैसउँ घी कड़तइ,
बिन टेड़ी करैं उगैयाँ *।

जौ जुग सूदेपन कौ नैयाँ।

(१६)

अच्छर परनें ते सो पर गये।

जनम-जनम करनी के मरका *।
मरनें ते सो मर गये।
जाकी जैसी जाँगा जुतगइ,
जीनें जैसे हर नयें।

---

* डाट का लगाना।   * उँगली।

अच्छर परनें ते सो पर गये ।

वैसेइ कुरा फूट जम निकरे,
जैसेइ बीज बगर गये ।
अपनें-अपनें खेत काट कैं,
अपनें-अपनें घर गये ।

अच्छर परनें ते सो पर गये ।

मोंती मन के प्यअन नाँप कैं,
भाव-कुठीलन भर दये ।
जब-जब जैसे जतला रोपे,
तब-तब तैसे दर गये ।

अच्छर परनें ते सो पर गये ।

अगन-जुगत आहार सिद्ध कर,
'मित्र' भाव उर भर गये ।
भोग-भोग कैं भव सागर सें,
नेव-नाव चढ़ तर गये ।

अच्छर परनें ते सो पर जये ।

---

* बड़े-बढ़े गढढा नींचे ऊँचे ।

(२०)

जिदना सूदें हुयें गुसैंयाँ।

जो-जो मोसें एनस राखत,

बे! सब परहैं पैंयाँ।

धीरज कबउँ न छोड़े,

ऊँगें इतकीं उतै तरैंयाँ।

जिदना सूदे हुयें गुसैंयाँ।

अपनीं जाँग उघरतन होतइ,

जग में खूब हँसैंयाँ।

बैसइँ अपनीं लज्या होतइ,

अपनेइँ हाँत रखैंयाँ।

जिदना सूदे हुयें गुसैंयाँ।

स्वाँत बूँद तज गंगाजल कौं,

चातक नईं पिबैंयाँ।

'मित्र' खरे खोटन की होतइ

परखन त्रिपता भैंयाँ।

जिदना सूदे हुयें गुसैंयाँ।

❖

(२१)

ऊधौ का कउँ मन की बात।

ज्यों-ज्यों नेत्र * गाँठ सुरजाउत—

त्यों-त्यों उरजत जात।

ऊधौ का कउँ मन की बात।

निठुअइँ ‡ उनकों मोय न मेरो।
मोत जतन कर-कर मैं हेरो।
सोचत कबउँ न मन अपनें में,
कीसें करिये घात।

ऊधौ का कउँ मनकी बात। ज्यो-ज्यो—

जोग लैंन की बासें कउतइ।
जी कों कछू न सुद बुद रउतइ।
बौ तन जोग सादवेंकों का,
जी में अतर बसात।

ऊधौ का कउँ मन की बात।

जमना के रूखन की छैयाँ।
कौनउँ तराँ बिसरतीं नैयाँ।
करत बेदना दिनें-दिनेंवा,
महारास की रात।

---

* प्रेम ‡ बिलकुल।

ऊधो का कउँ मनकी बात। ज्यों-ज्यों—

मुरक-मुरक कैं तिरछी हेरन,
अधरन पै बँसुरी की फेरन।
'मित्र' सुरन की बा मीठी धुन,
अबलों जिया जुड़ात।

ऊधो का कउँ मन की बात। ज्यों-ज्यों—

(२२)

रजऊ रउतइ मोरे नेंरें*।
तोऊ मोरी कोद‡ न हेरें।

मैं सत् गयँ बैठी घर मैंयाँ—
जाउँ न मेंरे-तेरें।
माया-वन्तीं तिरियाँ रउतीं,
रोजइँ उनकों घेरे। रजऊ—

मैं पुरखन की लज्या कों लयँ,
पैरों नदिया गैरें।
देखो किदिना 'मित्र' गुसैंयाँ,
सैंयाँ को मन फेरें।

रजऊ रउतइ मोरे नेरें।
तोऊ मोरी कोद न हेरें।

---

* नजदीक ‡ ओर।

(२३)

साजन साँची देव बताई।
रातै निदिंया कित विलमाई।
बिन गुन-माल गरे में पैरँ।
माहुर भाल दिखाई।
नैना अलसानैं से होरये,
रये मन-भेद जताई। साजन—
निठुआँ * फीकीं परगइ रजुआ,
अधरन की अरुनाई।
बिथुरे 'मित्र' पेंच पगिया के,
गईं मुख-दुत कुमलाई।
साजन साँची देव बता
रातें निदिया कित विलमा

(२४)

मन अनमनें रउत उदना सें।
खबर सुनीं जिदना सें।
कौंन बात राधाजू कैदइ,
खेलत में किसना सें।

---

* बिलकुल।

उनकी बाखर * टेरन मैं गइ,
कड़ अपनें अँगना सें।
नेंक न मानीं मौतक ‡ मैं कइ,
पूंछ लेव जमना से।
को दोहै अब अपनीं गैयाँ,
'मित्र' बिना लिवना † सें।
मन अनमनें रउत उद्ना सें।
खबर सुनीं जिद्ना सें।

✤

(२५)

कँबर राधका आकैं।
कैगइँ गुँइयन सें समझाकैं।
ऊधो की सेवा सब मिलजुल,
करियो सबइ तराँ कैं।
मक्खन, मठा, दई, गैया कौ,
मीठो दू ; प्यआ कैं।
'मित्र' ज्ञान सुन्नें का उनकौ,
अपनों चित्त लगाकैं।

---

* घर ‡ बहुत सी † गाय के पैरों में बाँधने की रस्सी ।

करिये बिदा नेव † को सूदो,
साँचो पाठ पढ़ाकैं।
कुंवर राधका आकैं।
कैगईं गुंइयन सें समझाकैं।

※

(२६)

जे नइँ आईं पाँउनीं झाँकीं।
झँझरिन में हो झाँकी।
फँदक-फँदक मुनियाँ सी कर रईं,
केहर से करहा कीं।
गुना * बनक मुंयाँ सुवनासी—
नाक, हरन नैंना कीं।
टैय्या ‡ बड़ो कछोटा मारैं,
रूप रंग में बाँकीं।
'मित्र' दूर सें निरखत रैय्यौ,
हैं बश करन जिया कीं।
जे नइँ आईं पाँउनीं झाँकीं
झँझरिन में हो झाँकीं

---

† प्रेम। * रहन वस्त्र हुआ आभूषण
‡ धोती को दांये ओर से सिर रैं लपैटना।

(२७)

राधे भईं कबसें ब्रजरानीं।
सोचत रात सिरानीं।

हम तुम दोऊ संग लगनियाँ,
एक घाट कौ पानी।

राधे भईं कबसें ब्रजरानीं।
... ...

सात भाँवरन कीं दोउ में सें,
कोउ नैंयाँ पटरानी।

राधे भईं कबसें ब्रजरानीं।
... ...

'मित्र' रात-दिन बिरथाँ तड़पै,
हमसों रुओ रिसानीं।

राधे भईं कबसें ब्रजरानीं।
... ...

(२८)

राधे कैसीं तुम ठकुरानीं।
बिनईं मोल बिकानीं।

लुरूँ-लुरूँ करतीं फिरतीं हौ
काँगइ बान पुरानीं।
राधे कैसीं तुम ठकुरानीं
... ...

अबै तलक कुठिया* में गुर-
फोरत रईं, काउ न जानीं।
राधे कैसीं तुम ठकुरानीं
... ...

'मित्र' कहैं कउँ उतर न जावै,
जौ मोंतीं सौ पानीं।
राधे कैसीं तुम ठकुरानीं
... ...

---

* मिट्टी का बना कच्चा पात्र।

(२६)

नैना दिखा-दिखा कजरारे।
कान करदये कारे।
माखन चिखा चटोरा करदयॆ,
गुल्चा खाँय बिचारे।
नैना दिखा-दिखा कजरारे।
... ...

गूजर जात तकत ऊजर
मैं, काँतक‡ गाँउ पमारे†।
नैना दिखा-दिखा कजरारे।
... ...

'मित्र' राधका वारेइ सें तें
ऐसे गजब गुजारे।
नैना दिखा-दिखा कजरारे।
... ...

‡ कहाँ तक। † बहुत से यशों का वर्णन।

(३०)

कउतीं बँदुआ कान हमाये।
कुबरी टौना कर बिलमाये।

गूजर जानत पड़ा परख,
का परखै गज-मतवाये।

कउतीं बँदुआ कान हमाये।

....

हीरा खुरसें रईं खुटी में
मुँदरी नईं जड़ाये।

कउतीं बँदुआ कान हमाये।

....

'मित्र' सबइ सें स्याम सलौनें
कबउँ न कंठ लगाये।

कउतीं बँदुआ कान हमाये।

(३१)

राधे नेव * कहा तुम जानों।
कई हमाई मानों।

जैसें परत बटेर ‡ हाँत में,
मन मुसकावै कानों।

राधे नेव कहा तुम जानों।

....

किसा तुमाई बई मई हैं;
परछुत देउँ कहानों।

राधे नेव कहा तुम जानों।

....

'मित्र' कऊँ बरसत रये पानू
आखिर मिलै निमानों †।

राधे नेव कहा तुम जानों

....

---

* प्रेम ‡ एक तीतुर के रंग का छोटा पक्षी

† अन्तिम समुद्र में।

(३२)

राधे कैसीं रईं चिमाकैं।
कश्रौ उजागर आकैं।

अबै तलक अपने मों, बातें
कउत रईं मिठयाँ
राधे कैसीं रईं चिमाकैं।

....

सब जानत करतूत तुमाईं
नइँ हम कउत बनाकैं।
राधे कैसीं रईं चिमाकैं।

'मित्र' कौंन कौं रईं नचाउत,
चुरअन छाँच प्याकैं।
राधे कैसीं रईं चिमाकैं।

(३३)

राधे कैसीं गुनकीं सकला,
खूब मचाइँ घपला।

जाँगन-ताँगन बजरऔ तुमरौ,
बदनामी कौ ढपला *।

राधे कैसीं गुनकीं सकला।

....

हो तुम बिन्द्रावन कीं ठजरउ,
हम दासी अत कपला।

राधे कैसीं गुनकीं सकला।

....

'मित्र' कहैं अब चमक न पैहै,
चाल तुमाई चपला।

राधे कैसीं गुनकीं सकला।

....

* एक वाद्य।

(३४)

चन्दा लगत शरद् कौ नीकौ।

समुदा-पूत वीर-कमला कौ,

दुक्ख दैन भौजी कौ।

चड़ो ईश के शीश पुजत है,

वल-पा पारवती

चन्दा लगत शरद् कौ नीकौ।

औगुन मौत एक गुन जामैं,

दाता बड़ो अमी कौ।

हार तरैयन कौ पैरें हैं,

सुख सुहाग रजनी

चन्दा लगत शरद् कौ नीकौ।

पँथिन कौं विसराम देत है,

चोरन लागत फीकौ।

साँचौ सुक्ख दैन भोगिन कौ,

चैन चकोरन जी

चन्दा लगत शरद् कौ नीकौ ।
सब कोउ जाकौं कउतइ सरवस,
कमोदिनी के ही कौ ।
'मित्र' सदाँ चरनन कौ चेरौ
राजाराम धनी कौ ।
चन्दा लगत शरद् कौ नीकौ ।

❋

(३५)

रे पंच्छी तिसना की डाँगन में, भटकत मुतके दिन बीते ।
फल की इच्छा सें बिरछन कीं,
मुलकन * देखीं डार डरैयाँ ।
करमन सें जो मिले उनें—
दयँ, छोड़ तकीं फिर ताल तलैयाँ
सबरइँ घाली चोंच तऊ रयँ अरे पेट रीते के रीते ।
रे पंच्छी...
अपनेंइँ जात पाँत के पच्छिन कौं,
कर पीछे आँगैं दौरे ।

* बहुत सी

कितनन कौं घायल कर पंजन—
विदो-विदो समुदा में बोरे।

तइपै तेरी मरी न मंसा इतने करम करे तें लीते
रे पंच्छी..................................

संसारी के बन में आये,
भारी-भारी पंखन बारे।
उड़त-उड़त पंखा सब झर गये,
पार न पाऔ तब मन हारे।

तइपै तें कउतइ जा जग में हम सब सें निठुआँ * अनर्च
रे पंच्छी..................................

जा सें जो सैज ‡ मिल जावे,
बइसें तिरपत ‡ हौकैं रइये,
'मित्र' सत्र कौ भेद भुला कैं,
पनमेसुर की कीरत गइये।
कमउँ न मन अपनें में सोचे काम क्रोध कों हमनें जी
रे पंछी तिसना की डाँगन में भटकड़ मुत के दिन बी

† बुरे। * बिलकुल ‡ तृप्त।

(३६)

रे मनुआँ ! बिन करम करैं, तरबे की झूँटी आशा तेरी ।
जो कजँत * की अबकी बिरियाँ,
भ्रमना में तें भरमत रैहै ।
तो फिर तेरौ संगी साती,
कितउँ न कोऊ एक दिखै हैं ।
खोटे पूरब के करमन की घिर आई चउँ ओर अँधेरी ।
रे मनुआँ ....
तिसना के भरकन ‡ में परकैं,
कितऊँ जौ ;जी भटकत रैहै ।
पर चौरासी, जोंनन में इत-उत,
जौ जियरा तरसत रैहै ।
जासौं अबकीं बिरियाँ कैसउँ, होन न पावै तनकउँ देरी
रे मनुआँ ....
मानुस करम करत में कौनउँ,
फल की ना राखै अभलखा ।।
और न पुन्न करे कौ माखै
अपनें मौंसें अपनों साखा ।

---

* कहीं ‡ नीचे ऊँचे गड्ढे ।

दया-वर्द नैया में बांदै नदिया पार हौन कौं गैरी
रे पंच्छी...

थिरदा * सें धर ध्यान हरी कौं,
अन्तस मन सें कीरत गइये।
अरपन उनकेइ करम धरम कर,
काऊ के नइँ दोरें जइये।

इन लच्छिन सें मिलत 'मित्र' अन पाउन मक्ती मुक उजेरी
रे मनुआँ...

✲

(३७)

अब मन रामइँ में अनुरागौ।
माया के झूठे चक्कर में,
नाहक इत-उत भागौ।
अपनोंईं सुख अपनोंईं दुःख,
मानत रऔ अभागौ।

---

* स्थिर।

अब मन रामइँ में अनुरागौ।
कबउँ न करम धरम कौं चीनौं
कबउँ न गओ पिरागौ।
जब देखौ तब दाँत निकारैं,
पेट मरन कौं माँगौं।
अब मन रामइँ में अनुरागौ।
पूरब कौ कछु पुन्न उदै भओ,
सोउत—सोउत लागौ।
राम नाम अन्तस में मिद गओ,
जैसैं सुइ में धागौ।
अब मन रामइँ में अनुरागौ।
तिसना की डाँगन में बिदकैं,
फार लओ सब बागौ।
'मित्र' भोर कौ भूलो मटकौ,
सँजा गोंबड़े लागौ।
अब मन रामइँ में अनुरागौ।

(३८)

कउतइ अब कोउ नईं हमारौ।
तौ हीरा सौ अब तक तैंनें,
बिरथाँ जीवन गारौ।
अपनोंई सुख अपनोंई दुख,
हरदम जियें बिचारौ।

कउतइ अब कोउ नईं हमारौ।
मन में अबै तलक मानत रश्रौ,
अपनौं पुंजी पसारौ।
अपनों कुश्रा सबइ सें मीठौ,
और सबन, कौ खारौ।
कउतइ अब कोऊ नईं हमारौ।
अपनीं करनीं सब सें नौंनीं,
अपनों नोंनों द्वारौ।
अपनों गुनत लगाकें अपनों,
तकत रश्रौ उजयारौ।
कउतइ अब कोउ नईं हमारौ;
हटकत 'मित्र' रये बा बिरियाँ *,
तब रश्रौ करत किनारौ।
जब इन्द्रिन नें ज्वाब दै दश्रौ,
तब कैरश्रौ मैं हारौ।
कउतइ अब कोउ नईं हमारौ।

---

* उस समय।

३६

जौ पन्द्रा अगस्त कौ दिन सांचउँ सौनें कौ मैया।
जौई जन्नीं के पाँवन की बेड़ी कौ कटवैया॥

जइके लानैं लरी लराई झाँसी बारी रानी।
सब कोउ जानत सन्तावन की विपता भरी कहानी।

बीर बहादुर साह कटादये जइकौं अपनें छैया।
जौ पन्द्रा अगस्त कौ दिन सांचऊँ सौनें कौ मैया।

खुदीराम, जोगेन्द्र, फिरेते जइकौं बनें दिमानै।
रास बिहारी बोष जईकौं माटी मोल विकानैं।

भगतसिंह नें जइकौं लइती फाँसी की मिचकैया *।
जौ पन्द्रा अगस्त कौ दिन सांचऊँ सौनें कौ मैया।

तिलक, पटैल, मालवी ने जइके लानैं तन गारौ।
गाँधी जी नें जइ के लानैं सत्त शान्त ब्रत धारौ।

बीर जवाहर जइकौं छोड़ी फूलन की सुख सैया।
जौ पन्द्रा अगस्त कौ दिन सांचउँ सौने कौ मैया।

विन्ती इतनी मित्र 'मित्र' की सुन लइऔ चित धरकैं।
जा "स्वतंत्र भारत" की रच्छा करिऔ सब मिलजुरकैं।

जौ कउँ बिगरी बात कितउँ फिर नैयाँ कौउ पुंछैया।
जौ पन्द्रा अगस्त कौ दिन सांचउँ सौनें कौ मैया।

---

* झूला का झोका।

४०

ओ धरती के पूत ! जग उठो,
जगे सुरजमल भैया।
वीरन कौं करनी करबे कौ,
सांचऊँ जोइ समैया *।

तुमरेइ लानैं बापू ! नें भारत,
सुतन्त्र है कर दओ।
गाँव और पर गाँवन में,
जननीं के जस कौं भर दओ।

बा फैले भये जस के सांचउं,
तुमइ एक रखवैया।
ओ धरती पूत जग उठो,
जगे सुरजमल भैया।

समुद-रूप बन भेद छोंड़,
हरजन कौं हिरदैं भेलौ।
उमयौ ज्वार तरंगण सें,
चन्दा के संगैं खेलौ।

बन नौं कौनउँ तराँ देश कौं,
पूँछा † भार तरैया।
ओ धरती के पूत जग उठो,
जगे सुरजमल भैया।

---

* समय † केतु, उड़न तस्तरी

अंगद कैसौ समा माँय,
तुम रोपौ पाँव बिचारी।
डिगौ न कैसउँ आवें संकट,
कौनउँ तराँ अँगारी।

सुक्ख शान्त की तब आहै,
घर-घर में सीता मैया।
ओ धरती के पूत जग उठो,
जगे सुरजमल्ल भैया।

लगी तुमारेई भविष्य पै,
आँख सबइ काऊ की।
तुम्मेंइँ छिपी शक्ति गाँधी की,
औ पटैल दाऊ की।

तुमइँ सुभाष, जवाहर ढेवर,
श्री पट्टाभि रमैया।
ओ धरती के पूज जग उठो,
जगे सुरजमल भैया।

तुमइँ कल्पना हौ तुलसी की,
तुमइँ सूर की बानी।
तुमइँ गूढ़ केशव की कविता।
तुमइँ कबीरा ज्ञानी।

तुमइँ गीत मीरा अन्तस के,
गिरधर प्रान रखैया।
ओ धरती के पूत जग उठो,
जगे सुरजमल भैया।

तुमइँ जोत लक्ष्मीबाई की,
छत्रसाल कौ पानी।
श्री जगदीशचन्द्र बसु तुमईं,
तुमइँ रमन विज्ञानी।

तुमइँ विवेकानन्द, विश्व में,
भारत कौं चमकैया।
ओ धरती के पूत जग उठो,
जगे सुरजमल भैया।

❖

अपनें घरकी अपनें हाँतन,
बात बनायैं रइऔ।
बिगर न पावै तन-मन-धन सें,
होड़ लगायें रइऔ।

भारत नैया के निठुअँई * हो,
तुमईं एक खिवैया
ओ धरती के पूत जग उठो,
जगे सुरजमल भैया।

बड़ा उर्वरा शक्ति धरा की,
खूब अन्न उपजाऔ।
'मित्र' हवा, पानी, के नौंनें,
नये विमान बनाऔ,

बनौं राष्ट्र रच्छा कौं लछमन—
रेखा के खिचवैया।
ओ धरती के पूत जग उठो,
जगे सुरजमल भैया।

---

* बिलकुल ही।

(

गईं गाँवन के मैया हो, भारत की नैया के तुमइँ खैन हार

समुद कर्‌रुऔ भेदन सें घोर।

ज्वार रूपी ऐनस * कौ जोर।

पवन के झोका देत झकोर।

परी तिसना की मोंर-मरोर।

डूब न जावै कौनउँतरियाँ ‡ बननइऔ पतवार।

गईं गाँवन के मैया हो, भारत की नैया के तुमइँ खैनहार

झाँझरी नाव दूर है तीर।

स्वारथी मगरन की भइ भीर।

न जानत जे काऊ की पीर।

मछैंया बनकैं भईं अधीर।

सेवा विरत डाँढ़ के बल से, कर दइऔं तुम पार।

गईं गाँवन के मैया हो, भारत की नैया के तुमइँ खैन हार

अकस † मकसन नें डारौ रेद।

हो गये जी सें लाखन छेद।

सबइ कौं जी कौ हो रओ खेद।

आइऔ छोंड़-छोड मत-भेद।

---

† असमंजस

तुरतइँ करो मरम्मत जी सौं होवे बेड़ा पार।
गईं गाँअन के भैया हो, भारत की नैया के तुमइँ खैन हार।
तुमइँ सें हैं सबई विन्तवार।
न करियौ भैया नैक अबार।
न हिरदे में कछु सोच विचार।
करौ जो देर न कड़ है सार।
मान 'मित्र' की कइ जुर मिलकें लीऔ जाय उबार।
गईं गाँवन के भैया हो भारत की नैया के तुमइँ खैन हार।

✦

(४२)

त्योहारन में दसरये कौ,
त्योहार सबइ सें नौनों।
जई दिना धरती फूलत,
सूरज बरसाउत सौंनों
तिलक चड़ाउन की जइ दिन कौ,
जग में प्रथा पुरानी।
जई दिना ख्वौ नौं मइँना कौ,
गर्भ धरत छकानी।

जई दिना खों आउत है,
बीरन पै नई जुवानी।
जई दिना खों धरौ जात है,
तरवारन पै पानी।

जई दिना बउएं धरतीं हैं,
घर-घर में दसरैयाँ।
जई दिना घर-घर मे पूजी;
जातीं सगुन चिरैयाँ।

जई दिना सब कोऊ पूजत,
है, ठैंकुर कौ बिरश्रौ।
जई दिना सब कोऊ पूजत,
अपनें—अपनें घुरुवा।

जई दिन नीलकंठ कऊँ उड़,
दायें सैं बायें जावै।
सत्र विजय कौ राजा फिर—
नईं, कौनउँ सगुन मनावै।

जइ-दिन पूजत बैन बाँय—
है, वीर विजइ मैया की।
जइ-दिन परखन होत जगत में,
राव और रैया की।

जई दिना दुर्गा ने दानव,
शुंभ निशुंभ विदारौ।
जई दिना छत्रा ने औरंग,
कौ नौं रंग बिगारौ।

जई दिना के लानें भयेते,
राम—लखन बनबासी।
लंक विजयकर, समर माँय,
मारौ रावन अघरासी।

वैर भाव कौं विसर 'मित्र'
जइ दिन खौं रलौं करनीं,
करनी की, देई, देवतन सौं,
कीरत जाय न वरनीं।

(४३)

ओ धरती के पूत! जग उठो,
जगे सुरज मल भैया।
संत विनोवा! तुमें जगारये,
नौंनों आव समैया।

औंड़ रजाई पँचमैं‿ा सैं,
उतरौ नैंचैं आओ।
डरौ टरैया में धनुआ की,
दसा देख तौ जाओ।

करत खुसामद कैउ जुगन सैं,
जोड़ तुमाये घर की।
आमद कछु ऊपर की नैयाँ,
रोटी बोइ गजर की।

ठिठुर रऔ दैदो उतरन की,
जाकौं एक कतैया।
औ धरती के पूत जग उठो,
जगो सुरजमल भैया।

मानीं नौंनीं अपनीं सबकौं,
लगतइ है घरवारी।
कछू हर्ज नइँ बाय रोज,
पैराऔ मूना सारी।

पै सोचो दुरजन सैं सेवा,
करबइ द्वारेवारी * ।
मौत समारत तन, देखौ,
तउ हो-हो जात उघारी ।

तनक सरम कर सात्र! सिमादों,
बाकौं एक धँधैयाँ ।
ओ धरती के पूत जग उठो,
जगे सुरजमल भैया ।

दूद लुचइँयन कौं तुम बाँदें,
दोरैं ‡ दहस गैयाँ ।
और तुमाये हरबारे कौं,
नैयाँ चार कुचैयाँ ।

चड़े अटाई पै तुम उत—
गरमीं में भूलौ भूला ।
परौ बमुरिया तरैं दुफरिया,
में, इत तपै गदूला ।

---

* मेंतरानी ‡ द्वार ।

घर उसरा नइँ सइ बनवादो,
बाकौं एक टँ[illegible]या।
ओ धरती के पूत जग उठो,
जगे सुरजमल भैया।

बुतत तुमायँ मुलकन * जाँगा,
तइपै डरी अपरती ‡।
सरत रउत बंडन में जुनरी,
बइकी कछू व जरती।

टुँडा के मोंड़ा नौं नैंयाँ,
एकउ बीगा धरती।
दै दो बाकौं गुजर-बसरकौं,
परी भूम जो परती।

मान 'मित्र' की कइ लिखवालो,
खातें नाव दिवैया।
ओ धरती के पूत जग उठौ,
जगै सुरजमल भैया।

❖

---

* बहुतसी ‡ जिनका पार नहीं।

(४४)

विदा की कीनैं वेल वई।
मिलकर बिछुरन की नई नौंनी,
जग में नीत दई *।

विदा की कीनैं वेल वई।

शरद जुनैंयासी, बारी ननदिया की,
चमक रई उनई ‡।
विदा की कीनैं वेल वई।

झिलमिल होंय वेदियाँ, कानन,
करन-फूल छवनई।
विदा की कीनैं वेल वई।

केशन-सैंदुर नाँय राहु कैं—
शशि नैं साँग हई।
विदा की कीनैं वेल वई।

---

* दैव ‡ माथे की बेंदी।

सोहत शीश फूल ता ऊपर
रविगत मंद भई।
बिदा की कीनैं वेल वई।

झमकै बदरिया सी नैंन तलैंयन—
बैनन ! धाय * दई।
विदा की कीनें वेल वई।

बिरन ! मसोस ‡ मनई मनराये,
ज्यों नैनू माँय मई।
विदा की कीनैं वेल वई।

झलनन, पलनन कीं गुइँयनकी,
नईं कछु जात कही।
विदा की कीनै वेल वई।

"मित्र" परोसिन के अँसुअन सैं
धरती भींज गई।
बिदा की कीनैं वेल वई।

---

* ऊँचे स्वर से रोना ‡ जबरदस्ती रोकना।